KANARA WELFARE TRUST'S
DIVEKAR COLLEGE OF COMMERCE
KARWAR - 581301 (UTTARA KANNADA)
NAAC Re-accredited- B Grade
☎-9113806659 email:-kwtdcckarwar@gmail.com
Website:- www.divekarcollege.ac.in

3.3.3 Number of books and chapters in edited volumes / books published and papers published in national / international conference proceedings per teacher during the last five years.

This is to certify that following is the cover page, content page and first page of the books and chapters in edited volumes / books published and papers published in national / international conference proceedings per teacher during the last five years.

KANARA WELFARE TRUST'S DIVEKAR COLLEGE OF COMMERCE KARWAR

PRINCIPAL
KANARA WELFARE TRUST'S
DIVEKAR COLLEGE OF COMMERCE
KARWAR - 581 301

Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during year 2019-20.

Sl. No.	Name of the teacher	Title of the book/chapters published	Title of the paper	Title of the proceedings of the conference	Name of the conference	ISBN/ISSN number of the proceeding	Name of the publisher
1	Smt. Sandhya Kadam		Dil Me Yade Chod Gaye	kavyamrut	antharashtriya kavya goshti	ISBN 978-93-89194-25-8	Adhikaran Prakashan Delhi
2	Smt. Sandhya Kadam		BALIDAN	Bhasha- piyusha		KARHIN/2010/33931	KARNATAKA HINDI PRACHARA SAMITHI BENGALURU.
3		INTERNATIONAL JOURNAL OF EXCLUSIVE MANAGEMENT RESEARCH		INTERNATIONAL JOURNAL OF EXCLUSIVE MANAGEMENT RESEARCH	INNOVATION IN BANKING AND FINANCE SECTOR	ISSN 2249-8672	ARCHERS AND ELEVATORS PUBLISHING HOUSE, BANGLORE
4	Dr. B R Tole		Information Literacy in Higher Education	Sustainable Development and Knowledge Managemnt in Higher Education	Sustainable Development and Knowledge Managemnt in Higher Education	ISBN 978-81-940165-1-9	GOVT. FIRST GRADE COLLEGE SHIRALKOPPA.
5	Mr. Subham Talekar		The study on motivational and facilitating factors that motivated new entrepreneurs in Karwar Taluka	An International Multidisciplinary Quarterly Research Journal.	CHALLENGES OF ENTREPRENEURSHIP AND ITS COPING STRATEGIES	2277-5730	AJANTA PRAKASHAN

काव्यामृत

कर्नाटक हिंदी प्रचार समिति,
जयनगर, बेंगलुरू

बहुभाषा संगम संस्थे,

हुबली(पंजीकृत)

संयुक्त रूप से आयोजित

अंतर्राष्ट्रीय काव्य गोष्ठी

संपादक
प्रा. वि. रा. देवगिरी
प्रा. विद्यावती राजपूत

KANARA WELFARE TRUST
DIVEKAR COLLEGE OF COMMERCE
KARWAR

PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's
Divekar College of Commerce
KARWAR - 581 301

प्रकाशक :

अधिकरण प्रकाशन

मकान संख्या-133, गली नम्बर-14, प्रथम तल,
बी-ब्लॉक, खजूरी खास, दिल्ली-110094
मोबाईल : 9716927587
ईमेल : adhikaranprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण	:	2020
आवरण चित्र	:	लेखक के सौजन्य
टाईप सेटिंग	:	मनीष कुमार सिन्हा
प्रिंटिंग	:	जी.एस. ऑफसेट, दिल्ली

© संपादक

ISBN : 978-93-89194-25-8
मूल्य : 150 रुपये

काव्यामृत(कविता संग्रह)-सं. डॉ. वि. रा. देवगिरी, डॉ. विद्यावती राजपूत

Kavyaamrut (Poetry Collection) Edited by Dr. V. R. Devagiri, Dr. V. G. Rajput

अनुक्रम

संपादकीय	07
नतमस्तक हूँ	11
उत्तरदायित्व	12
गाँव	14
अजन्मी व्यथा	16
लापता हूँ	19
नए दौर ने जादू फेरा, बात पुरानी छू-मंतर!	20
सिक्का	22
या भुमीची ती रक शोभर खरी	23
दिल में यादें छोड़ गये।	25
ब्यूटी पार्लर में एक दिन	27
ऐसा क्यों?	29
सुनहरी जिंदगी	31
पावस	32
बापूजी का प्रकाश	33
महापर	35
सिर्फ तुम हार मानो मत	37

दिल में यादें छोड़ गये।

यह इनसान बड़ा अद्भत था।
सारे भारतीयों को अपना समझता था।
इसलिए आज धरा भी रो ली।
सोचकर मेरा प्यारा लाल आज खो दी।
भारत माँ की आंखों में मैंने नमी देखी
मेरा प्यारा अटल सी औलाद कभी न दे सकी,
इसे तो इनसान के रूप में जन्म दिया था
भारत रत्न मेरा अटल, इंसानियत से भी उपर उठ गया।
काल के कपाल पर ही एक कविता लिख दिया।
अजातशत्रु का संकल्प देकर चला गया।
जाते-जाते यह कह गया, मैं जाऊँगा नहीं यही रहूंगा,
भारत माँ की गोदी जीऊंगा।
रार न करो, वार न करो,
रमते रहना प्यार में।
मनुष्य हैं हम प्यार में,
पड़ोसी रहे सदा जहन में
अनु से लेकर बम जानते, समय-समय के साथ हैं।
सबसे पहले दुनिया वालों, आप सभी अपने ही हैं।

ऐसा संदेश छोड़ गये।
अटल, अटल ही बनकर रह गये।
बस हमारे दिल में यादें छोड़ गये।

—श्रीमती संध्या दत्ता कदम,
केनरा वेलफेर ट्रष्ट, दिवेकर कॉलेज ऑफ कामर्स, कोडीबाग,
कारवार-581301, जिल्हा उत्तर कन्नड, राज्य-कर्नाटक
संपर्क : 09448796762

भाषा - पीयूष

समाचार पत्र की पंजीयन

वर्ष VIII अंक 4

15 मार्च 2020

सर्वज्ञं तदहं वन्दे परंज्योतिस्तमोपहम् प्रवृत्ता यन्मुखाद्देवी सर्वभाषा सरस्वती।

महा शिवरात्रि

कर्नाटक हिंदी प्रचार समिति की त्रैमासिक मुख पत्रिका।

PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's

हुए, लेकिन उनके अनुशासन के डर से तुरंत औजार उठाते हुए काम में मशगूल हुए। इंजीनियर सीधे मेरे पास आए और चाबी देकर बोलने लगे, ' गाडी अच्छी है, जरूरी काम था, किसी दूकान जाना था। दूकान दूर होने के कारण देर हुई।''

''ठीक है साब, काई बात नहीं।'' मैं गद्‌गद् हो गया था।

'' अरे सुनना डिग्गी में बॉक्स हैं, खोलकर सभी को देना और शाम छः बजे लौटूँगा तो मेरे लिए भी रखना। समझे ?''

तभी उनके कार ड्राइवर ने कार स्टार्ट की और इंजीनियर उसमें बैठकर चले गए। काँपते हुए मैंने मेरी टू-व्हीलर की चाबी ली और डिग्गी खोलते ही चकित रह गये। एक बुके के साथ चिट्ठी मिली, जिसमें लिखा गया था, ' सतीश, तुमने पाई -पाई जोड़कर गाड़ी खरीदी और वह भी नगद रूप से । दूसरे मजदूरों की तरह कहीं बैंक या फाइनान्स से कर्ज न लेकर । तुम्हार अभिनंदन''।

अब तो मेरे लिए इंजिनियर ने अलग ही पहचान बनाई थी। गाड़ी मेरी और मिठाई उनकी ।

बलिदान

-श्रीमती संध्या दत्ता कदम

वतन पर जान कुर्बान करेंगे, माता भारती की शान बचायेंगे
बहादूरी आगे बढ़ते जाना, दुश्मनों को मिटा देना।
लहू बिछाये महाता का मान बढाते जाना
गद्दार न घुसपैट करे, न सरहद पार करे
उने चुन-चुनकर मारे, फिर कभी न निहारे
अपने गुलिस्थान पर नाज करना
अमन चयन से जीते रहने
कश्मिर हमारा स्वर्ग है, आतंक कैसे फैलाएगा ?
कहा नहीं सुनेगा तो, गोली खाकर मरेगा।
हर सितम झेलकर भी माँ तुझे हम बचायेंगे
सुरक्षा तेरी करते करते, खुद की जान मिटा देंगे।
दुश्मनों की मुंड उढायेंगे, तेरे चरनों में चढाएँगे।
लाख बाधा आने पर भी हम तुझे सजायेंगे।
नादिर कितना होशियार रहे हम उसे मिटायेंगे।
हर पल तेरी याद में, हम अपनों से छुट जायेंगे।
गम नहीं खुद मिटने से, हम कहेंगे अभिमान से
भारत माता अमर रहे बीरों की बलिदार से। *

प्रहरी

-श्रीमती डॉ. पुष्पाराव

सरहद पर बैठा अकेला प्रहरी
इस तन्हाई में साथ है उसकी यादें घनेरी
याद आ रहे हैं माँ के वे आँसू
बाप का मुरझाया सा चेहरा
घूंघट के आड में उदास नया चेहरा
चंद बातें वादें और रातें जो गुजारे
फिर भी गर्व से सीनाताना
देश का जो ठहरा वह प्रहरी।
नादान ये नहीं जानता
देश को सरहद के उसपार से नहीं खतरा उतना
देश के नेता, अफसर आतंकवादियों से जितना
करवाकर दंगे मरवाकर लोगों को ये नेता
कर रहे हैं कुर्सी पक्की, भर रहे हैं झोलियां अपनी।
कभी सोचता है भरकर आँखों में आँसू
शायद लौटेगा तिरंगा ओढे जिस दिन अपने घर
सूखेंगे माँ के आँसू कहेंगे मुझको था गर्व उस पर
आज सारा देश कर रहा है गर्व उस पर
शहीद कभी मरते नहीं ,हो जाते हैं अमर ।
सरहद पर बैठा अकेला प्रहरी।। **

Government of Karnataka
Department of Collegiate Education

GOV[illegible]MENT FIRST GRADE COLLEGE

Shira[illegible]577428, Shikaripura Tq, Shivamogga Dist, Karnataka
(Affiliated to Kuvempu University)
(NAAC Accredited with 'B' Grade)

One Day Multidisciplinary
National Conference Proceedings on

"SUSTAINABLE DEVELOPMENT AND KNOWLEDGE MANAGEMENT IN HIGHER EDUCATION"
"ಉನ್ನತ ಶಿಕ್ಷಣದಲ್ಲಿ ಸುಸ್ಥಿರ ಬೆಳವಣಿಗೆ ಮತ್ತು ಜ್ಞಾನ ನಿರ್ವಹಣೆ"

On 19TH March, 2019

PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's
Divekar College of Commerce
KARWAR - 581 301

Organized by
Internal Quality Assurance Cell (IQAC)
Government First Grade College, Shiralakoppa

Chief Editor
Dr. Rajeshwari H.

Editors
Dr. Raghavendra R. H.
Dr. Asaraf Unnisa L.

One Day Multidisciplinary National Conference Proceedings on
"SUSTAINABLE DEVELOPMENT AND KNOWLEDGE MANAGEMENT IN HIGHER EDUCATION"

Year of Publication : 1st Edition July 2019

Volume : 1

Copyright © [2019] [Chief Editor] All Rights Reserved.

No Part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording or by any information storage and retrieval system without permission in writing from the publisher.

Size : A4
Paper : 75 GSM
Binding : Paper Back
No. of Pages :600
No. of Copies : 200
ISBN :978-81-940165-1-9

Chief - Editor
Dr.Rajeshwari H.

Editor
Dr.Raghavendra R.H.
Dr.Asaraf Unnisa L.

Printed at:
Sneha Printers
G B Lane, Cottonpet,
Bangalore - 560053

Disclaimer

Although every precaution has been taken in the preparation of this book, the publisher and author assume no responsibility for errors or omissions. Nor is any liability assumed for damage resulting from the use of the information contained herein.

113. A Study of the Effectiveness of Yoga Education on Holistic Development of Student
Dr. A. B. Anilkumar & Ravikumar N G 326

114. Information Literacy in Higher Education
Dr. B R Tole 329

115. Role of Sports in Higher Education Issues, Challenges and Suggestions
M. V. Govindaraju 331

116. Effect of yoga on self confidence
Dr.Hanumanthayya Pujari 334

117. Comparative study on the selected motor fitness components between rural and urban high school boys
Mr. Harish K M& Mr. Lokesh S 337

118. Teacher Adjustment as Related to Interest and Attitude Towards Teaching
Jafar 341

119. Healthy Benefits of Doing Yoga
Jayakeerthy H T 344

120. Physical Education as part of Sustainable Development
Dr Jayaram Maraditot 347

121. Information Literacy in Higher Education
Shri. K. Kaleemulla 352

122. Role of Sports in Higher Education, Issues and Challenges
Shree K. Kaleemulla 354

123. The Significance of Sports and the Part of the Organizational Head
Dr. Kishor .V & Mr. Thippeswamy D H 356

124. Role of Sports, Yoga and Meditation in the overall development of a student
Krishnamoorthy Vaidya 360

125. Sports-Yoga-Meditation Build and Promote Moral Values
Kumaraswamy .K .C 366

126. Playing Ability of Kho-Kho Players in Co-Relation with Health Fitness and Motor Fitness of Male Kho-Kho Players of Karnataka: A Study
Manjunatha H S & Dr. Madialagan S 368

127. The Comparative Study of Cardio- Respiratory and Motor Fitness Ability Between Boxers and Wushu Players
Dr .Mantesh Kumber & Dr. Munegowda P 371

128. Sports Injuries and Treatment
Dr. Muneshwar.P. Ballary. 374

129. Physical Education as A Part of Sustainable Development
P. C. Murugeshappa, 376

130. Overall Development of Students Through Sports, Yoga And Meditaions
K. P. Nagabhushan Setty, 379

Information Literacy in Higher Education

Dr. B R Tole*

Abstract:

Traditionally, literacy means the ability to read and write. However, there are various types of literacy: Such as audio visual literacy, print literacy, computer literacy, media literacy, web literacy, technical literacy, library and information literacy etc. The traditional concept of literacy was primarily concerned by making people understand how to read and how to write in their day- to-day activities. Information literacy, however, is entirely different from these classical concept. It is a combination of all the aforementioned concepts but goes far beyond them. According to the American Library Association, information literacy is the ability to "recognize when information is needed and have the ability to locate, evaluate, and use effectively the needed information". Information literacy is the set of skills needed to find, retrieve, locate, analyze, and use information. To put it differently, Information Literacy skills empowers individuals with set of abilities and, critical thinking skills, which will assist them in becoming independent lifelong learners. Given this information explosion, it has become increasingly obvious that students cannot learn everything they need to know in their study fields during the years at college and the university. This is why information literacy has to fill in this gap through equipping students with the necessary critical thinking for effective problem solving and becoming lifelong learners.

Key words: *Information Literacy, Information, Information Explosion, Higher Education.*

INTRODUCTION

Higher education institutions are pioneers in society to provide higher education to the people"s society. They must meet society"s requirements by producing highly skilled people. They act as a leader for societal change and set an example for society to follow. The educated graduate of the 21st century should be one, who must empowered with various skills and abilities such as lifelong learning skills, enquiry and research skills to carryout systematic investigation for finding solutions to complex problems, employability and career development skills to succeed in the rapidly changing working place, capacity survive in the present globalised society, communication and information literacy skills, ethical, social and professional understanding, capability to think independently , exercise personal judgment and taking initiatives and good collaboration, teamwork and leadership skills. Information Literacy (IL) plays a very significant role to produce such skilled graduates in the present rapidly changing technological era.

THE IMPORTANCE OF INFORMATION LITERACY IN HIGHER EDUCATION.

Information Literacy is of immense importance to institutions of higher education. One reason is that some undergraduate students acceding university have limited background of fundamental research and information competency skills. They may not have acquired the necessary skills to effectively search for information, or evaluate, synthesize and blend ideas; or may not have learned how to use information in original work or give proper citation and reference for information used. While some students may have acquired basic computer skills to send electronic mail, navigate the web, and share files, they may not have been taught how to effectively search the Internet or effectively use library E-resources for academic research. This is where Information Literacy skills are essential and make the difference to the success of students.

SIGNIFICANCE OF INFORMATION LITERACY IN HIGHER EDUCATION ENVIRONMENT

The concept of information literacy has gained considerable attention in the higher education communities. There is a common belief that higher education"s institutions should include the teaching of lifelong learning skills in their missions. Universities have the responsibility of empowering their members with necessary skills, so that they can contend with the world of information independently. Since the 1990s, higher education communities throughout the world have stressed the importance of information literacy (as shown in Figure 1) for the following reasons:

1. Information literacy is essential to successful lifelong learning. Lifelong Learning is shortly called LLL. In simple terms it means" "learning that continues throughout a lifetime." Hojat defines LLL is a concept involving a set of self-initiated activities (behavioural aspect) and information-seeking skills (capabilities) that are activated in individuals with a sustained motivation (predisposition) to learn and the ability to recognize their own learning needs (cognitive aspect) .IL forms the basis of lifelong learning. It helps to make the students as lifelong learners and empowers them to acquire all the knowledge, values, skills and understanding they will require throughout their lifetimes and to apply them with confidence, creativity and enjoyment in all roles, circumstances and environments. IL competencies have been identified as a crucial element to foster lifelong learning and keep up with the fast emerging world.
2. Information literacy is a core competency in the information age. The arrival of information age and its rapid growth has created challenges throughout the world. It has brought an enormous increase in the quantity of information available to the public (includes students) and multiplied the media of

* Physical Education Director, Divakar College of Commerce, Karawar, Uttara Kannada Dist

knowledge transfer such as internet, CDs and electronic databases. Students can easily acquire large amount of information but they don''t know how authentic, valid and reliable the information is. This poses special challenges for students in evaluating, understanding and using information in ethical and legal manner. Information literacy as core competency helps students to locate needed information and evaluate it critically in order to face the new challenges of the information age.

3. Information literacy contributes to the improvement of learning and teaching Information literacy rejects the traditional teacher centered learning model, rather, it is based on active learning model in which the student is at the centre of the learning environment. Information literacy programs provide learners with self-directed, independent and constructive learning opportunities. The Alexandria Proclamation on Information Literacy and Lifelong Learning recommends: "Implement active pedagogical practices such as problem-based learning, service learning and constructive learning that are both in support of and well supported by the practice of information literacy"
4. Information literacy is one of the most critical literacy for an educated person in the 21st century In the present 21st century information era, students are needed to develop critical thinking abilities to become skilled users of information sources available in different locations and formats for their own self-directed learning. Foundation for Critical Thinking 18 defines Critical Thinking as the " intellectually disciplined process of actively and skillfully conceptualizing , applying, analyzing, experience, reflection, and reasoning or communication, as a guide to belief and action". People who think critically consistently attempt to live rationally, reasonably, empathically. IL acts as a key component in making students as critical thinkers, so that they are able to find the right information among the myriad of sources and apply it to make wise decisions.

CONCLUSION

Concluding it can be said that higher education institutions in India have an opportunity, and a challenge, to prepare students to meet the demands of the information age. Institutions need to identify what graduates should know and be able to do. Recipients of a quality education share certain attributes: critical thinking, problem solving, a global vision and a multicultural perspective, preparedness for work and good citizenship. Institutions must be accountable for how far their students go from the freshman year to graduation. The educated graduates of the 21st century should be the information literate graduates, one who should be able to find, evaluate and apply needed information. Universities and other institutions of higher learning should be responsible for producing such graduates.

VOLUME - VIII, ISSUE - II - APRIL - JUNE - 2019
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

7. A Study on Motivational and Facilitating Factors that Motivated New Entrepreneurs in Karwar Taluk

Shubham R. Talekar
Assistant Professor of Commerce, Divekar College of Commerce, Karwar.

Abstract

An entrepreneur is a person who organize a venture to benefit from an opportunity, rather than working as an employee. Entrepreneur play an key role in any economy. These are the people who have the skills and initiative necessary to anticipate current and future needs and bring good new ideas to market. In this paper I want to discuss the motivational factors that motivated the entrepreneur to start their enterprise and the problems faced by them.

Keywords: motivational factors, EDP, unemployment, labour turnover.

1. Introduction

Entrepreneurship is the process of designing, launching and running a new business, which is often initially a small business. Entrepreneurship has been described as the capacity and willingness to develop, organize and manage a business venture along with any of its risks in order to make a profit.

An entrepreneur is a person who organize a venture to benefit from an opportunity, rather than working as an employee. Entrepreneur play an key role in any economy. These are the people who have the skills and initiative necessary to anticipate current and future needs and bring good new ideas to market.

2. Objectives of the Study

I. To know the motivational factors that motivated new entrepreneurs.

II. To find the problems faced by new entrepreneurs.

3. Data and Analysis

The primary data is been collected from the interview method with structured questionnaire. The population is selected in Karwar Taluk, in Uttar Kannada district with simple random sample size of 30 respondents. Secondary data is collected from various journals, books. Collected data analyzed with the help of related statistical methods and tools.

KANARA WELFARE TRUST'S DIVEKAR COLLEGE OF COMMERCE KARWAR

PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's
Divekar College of Commerce
KARWAR - 581 301

Table no: 1.1 Classification on the Bases of geographical area of business

Area	No. of respondents	Percentage to total
Rural	06	20
Urban	24	80
Total	30	100

Source : primary data

Table no 1.1 states that 80 percent of the respondents are having their business in urban area and remaining 20 percent in rural area.

Table no: 1.2 Classification on the Bases of initial capital invested

Capital amount (in Rs.)	No. of respondents	Percentage to total
0-1 lakh	06	20
1-3 lakh	06	20
3-5 lakh	06	20
5 lakh and above	12	40
Total	30	100

Source : primary data

Table no 1.2 states that 40 percent of the respondents invested initial capital of Rs 5 lakh or above, 20 percent of respondents invested 0-1 lakh, 20 percent of respondents invested 1-3 lakh, and rest 20 percent of respondents invested 3-5 lakh in their business.

Table no: 1.3 Classification on the Bases of no of workers employed

No of workers	No of respondents	Percentage to total
1-2	24	80
3-5	06	20
6-10	Nil	Nil
Above 10	Nil	Nil
Total	30	100

Source : primary data

Table no 1.3 states that 80 percent of the respondents employed 1 to 2 workers and rest 20 percent of the respondents employed 3-5 workers in their business.

Table no: 1.4 Classification on the Bases of sales at initial stage

Sales amount (in Rs)	No of respondents	Percentage to total
0-1 lakh	18	60
2-3 lakh	Nil	Nil
4-5 lakh	Nil	Nil
Above 5 lakh	12	40

Total	30	100

Source : primary data

Table no 1.4 states that 60 percent of the respondents made a sales of Rs 0-1 lakh, rest 40 percent of the respondents made a sales of Rs above 5 lakh at initial stage.

Table no: 1.5 Classification on the Bases of line of activity of enterprise

Line of activity	No. of respondents	Percentage to total
Manufacturing	Nil	Nil
Trading	24	80
Services	06	20
Total	30	100

Source : primary data

Table no 1.5 states that 80 percent of the respondents have trading business and rest 20 percent of the respondents have service business.

Table no: 1.6 Classification on the Bases of form of organization

Form of organization	No of respondents	Percentage to total
Sole proprietor	24	80
Joint family	Nil	Nil
Partnership	06	20
Private ltd	Nil	Nil
Co operative	Nil	Nil
Total	30	100

Source : primary data

Table no 1.6 states that 80 percent of the respondents are sole proprietor their business, and rest 20 percent of the respondents are in partnership business.

Table no: 1.7 Classification on the Bases of source of capital

Source of capital	No of respondents	Percentage to total
Own investment	18	60
Friends & relatives	Nil	Nil
Govt. support	Nil	Nil
All the above	12	40
Total	30	100

Source : primary data

Table no 1.7 states that 60 percent of the respondents are used their own investment as capital and rest 40 percent of the respondents used own investment, loan from banks, financial help from their friends for capital purpose.

Table no: 1.8 Classification on the Bases of motivators in starting the enterprise

Motivators	No of respondents	Percentage to total
Husband/wife	Nil	Nil
Family members	30	100
Friends	Nil	Nil
Govt. agencies	Nil	Nil
Total	30	100

Source : primary data

Table no 1.8 states that 100 percent of the respondents are motivated by their family members for starting the enterprise.

Table no: 1.9 Classification on the Bases of reason for starting the enterprise

Reasons	No of respondents	Percentage to total
Un employment	06	20
Dissatisfying from jobs	12	40
Use of ideal funds	06	20
Use of technical skill	06	20
Total	30	100

Source : primary data

Table no 1.9 states that 40 percent of the respondents given a reason for starting the enterprise is dissatisfying from jobs, 20 percent of the respondents given a reason for starting the enterprise is un employment, 20 percent of the respondents given a reason for starting the enterprise is use of ideal funds, and rest 20 percent of the respondents given a reason for starting the enterprise is use of technical skill.

Table no: 1.10 Classification on the Bases of reason for choice of present line of activity

Reasons	No of respondents	Percentage to total
Easy to enter	12	40
Higher margin of profit	06	20
No competition	12	40
Family business	Nil	Nil
Total	30	100

Source: primary data

Table no 1.10 states that 40 percent of the respondents given a reason for choice of present line of activity is easy to enter, 40 percent of the respondents given a reason for choice of

present line of activity is no competition and rest 20 percent of the respondents given a reason for choice of present line of activity is higher margin of profit.

Table no: 1.11 Classification on the Bases of facilitating factors for choice of present line of activity

Facilitating factors	No of respondents	Percentage to total
Govt. promotional measures	Nil	Nil
Financial institution support	Nil	Nil
Self motivation	30	100
Others	Nil	Nil
Total	30	100

Source : primary data

Table no 1.11 states that 100 percent of the respondents chosen a self motivation as a facilitating factor for choice of present line of activity.

Table no: 1.12 Classification on the Bases of reasons for locating business in karwar

Reasons	No of respondents	Percentage to total
Existence of family	24	80
Infrastructure facility	Nil	Nil
Demand for product	Nil	Nil
Other	06	20
Total	30	100

Source : primary data

Table no 1.12 states that 80 percent of the respondents located their business in karwar because existence of their family in karwar, and rest 20 percent of the respondents given other reasons for locating their business in karwar.

Table no: 1.13 Classification on the Bases of entrepreneur development program attended

Valid	No of respondents	Percentage to total
Yes	06	20
No	24	80
Total	30	100

Source : primary data

Table no 1.13 states that 80 percent of the respondents have not attended any entrepreneur development program and rest 20 percent of the respondents have attended entrepreneur development program.

Table no: 1.14 Classification on the Bases of kind of problem faced

Problems	No of respondents	Percentage
Cash flow management	18	60
Time management	12	40
Marketing strategy	30	100
Hiring employees	12	40
Choosing what to sell	12	40
Capital	24	80
Labour turnover	06	20

Source : primary data

Table no 1.14 states that 100 percent of the respondents faced a problem of marketing strategy, 80 percent of the respondents faced a problem of source of capital, 60 percent of the respondents faced a problem of cash flow management, 40 percent of the respondents faced a problem of time management, hiring employees, choosing what to sell, and 20 percent of the respondents faced a problem of labour turnover.

4. Major findings

i. 80 percent of the respondents are having their business in urban area.

ii. 40 percent of the respondents invested initial capital of Rs 5 lakh or above for their business.

iii. 80 percent of the respondents employed 1 to 2 workers in their enterprise.

iv. 60 percent of the respondents made a sales of Rs 0-1 lakh P.A. in their business.

v. 80 percent of the respondents have trading business.

vi. 80 percent of the respondents are sole proprietor for their business.

vii. 60 percent of the respondents are used their own investment as capital for their business.

viii. 100 percent of the respondents are motivated by their family members for starting the enterprise.

ix. 40 percent of the respondents given a reason for starting the enterprise is dissatisfying from jobs.

x. 40 percent of the respondents given a reason for choice of present line of activity is easy to enter and no competition.

xi. 100 percent of the respondents chosen a self motivation as a facilitating factor for choice of present line of activity.

xii. 80 percent of the respondents located their business in karwar because existence of their family in karwar.

xiii. 80 percent of the respondents have not attended any entrepreneur development program.

xiv. 100 percent of the respondents faced a problem of marketing strategy, 80 percent of the respondents faced a problem of source of capital, 60 percent of the respondents faced a problem of cash flow management

xv. 40 percent of the respondents faced a problem of time management, hiring employees, choosing what to sell. and 20 percent of the respondents faced a problem of labour turnover

5. Suggestions

i. Establishment of training and educational centers in rural and semi urban areas.

ii. More support from governmental institutions, NGOs and private institutions that take care of young person's to become entrepreneurs through right education from universities and colleges.

iii. Motivational factors of young entrepreneurs needed to be over looked into in designing the curriculum and course structure.

iv. Continuous research to be made to analyze the motivational factors of young generation.

v. Government and entrepreneurship development board has to take care of problem faced by new entrepreneur, and try to give solution for them.

vi. The new entrepreneurs has to take better advantage of all the skims which are available for their development.

6. Conclusion

An entrepreneur is one who plays significant role in the economic development of the country. Basically an entrepreneur can be regarded as a person who has the initiative, skill and motivation to set up a business or an enterprise of his own and who always looks for high achievement. Most of the entrepreneurs are motivated by their family members to start the enterprise. The most important problems faced by new entrepreneurs includes marketing strategy, initial capital, cash flow management, hiring employees. So it is necessary to overcome from these problems in order to conduct an efficient business.

Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during the year 2018-19

Sl. No.	Name of the teacher	Title of the book/chapters published	Title of the paper	Title of the proceedings of the conference	Name of the conference	ISBN/ISSN number of the proceeding	Name of the publisher
6	Smt. Sandhya Kadam	NO	AMAR HI RAHANA	AASHWASTA	NO	RNI NO. MPHIN/2002/9510	PINKI SATYAPREMI, BHARATIYA SAHITYA ACADEMY UJAIN MADHYAPRADESH
7	Smt. Sandhya Kadam	NO	APANA HAUSLA BULAND KARNA	Hashiye ki awaz	NO	ISSN 2277-5331	INTEGRATED SOCIAL INSTITUTES 10 INSTITUTIONAL AREA LODHI ROAD, NEW DELHI

UGC Approved Research Journal No. 47816
पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/9510

ISSN : 2456-8856
डाक पंजीकृत क्रमांक 204/2018-2020 उज्जैन (म.प्र.)

Peer Reviewed Bilingual Monthly International Research Journal

आश्वस्त

वर्ष 21, अंक 180

सितम्बर 2018

संपादक – कलावती परमार

PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's
Divekar College of Commerce
KARWAR - 581 301

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

यह कैसा मन है तुम्हारा
यह क्या तमाशा बना रहे हो
अपना और अपने भगवान का
खिलौना बना लिया भगवान को
खेला और फेंका पानी में
पहले बनाते हो होलिका और रावण
फिर हो जलाते
फिर बिठाते हो गणेश, दुर्गा
फिर बहाते हो पानी में
पगला गये हो क्या ?
अपनी ऊब दूर करने के लिए
क्या–क्या करते हो तमाशे
अभी तक नहीं हुए तुम बड़े
वही बचपना, वही पचपना
कुछ तो रखो समझ
करो शरम।

2. कर्म हैं तुम्हारे

मैंने तोड़ा–मरोड़ा
कूटा–पीटा, पटका
किये टुकड़े–टुकड़े
पीसा बारीक
वह फिर खड़ा हो गया
मैंने गलाया
जलाया, डुबोया
वह फिर आ गया
मैंने पूछा
तुम हो कौन ?
सुर, असुर, गन्धर्व
माया–महामाया
भूत, प्रेत, साया
आत्मा–परमात्मा
कौन हो तुम ?
झूठ हो, सच हो
धोखा हो, छलावा हो
काया हो, छाया हो
उसने कहा
मैं हूँ कर्म
तुम्हारे कर्म
और तुम्हारा पीछा
नहीं छोड़ूंगा तब तक
जब तक
कर्म हैं तुम्हारे।

पाटनी कॉलोनी, भरत नगर, चन्दनगाँव
छिन्दवाड़ा–480001 (म.प्र.)
मो. 9425405022

अमर ही रहना

श्रीमती संध्या दत्ता कदम

मन को एवं कभी मायुस न करना
मन बेचारा बिखर न जाय
मन को इतना कठोर न करना
मन मुर्झाकर टूट न जाय।
मन को मध्यम रखते जाना
मन, मनों को मोहते जाय
मोहित मन को मगज में भेजना
मति, गति सीधी रह जाय।
मन के पिछे कभी न भागना
करा–धरा, खाली न हो जाय
नाम के पीछे तुम न दौड़ना
यहाँ से खाली बिदा हो जाय।
ऐसा तुम कुछ कर दिखलाना
समय ज़रा सा वसुधा को देना
मन मंदिर में माँ की सूरत
अवलोकित हो जग मगाय।
अवधूत रिपु तू शत्रुकंटक
बन सिर छेदन करता जाय
लाख बाधाएं आए तुम पर
धरती पर आँच न आय।
कदम–कदम पर रक्षक बनकर
पुत्र–पुत्रियों को फैलाया जाय
देखो फिर देश की शांती बनी रहेगी
भारत माता गर्व से सदा मुस्कुराएगी।

केनरा वेलफेयर ट्रस्ट, दिवेकर कॉलेज ऑफ कॉमर्स
कोडी बाग, कारवार–581352
जिला उत्तर कन्नड़ (कर्नाटक)
मो. 09448796762

दिसम्बर 2018 वर्ष : 13 अंक : 12 कवर सहित पृ. सं. 44 ISSN 2277-5331

हाशिये की आवाज़

संघर्षरत् लोगों की प्रथम मासिक पत्रिका

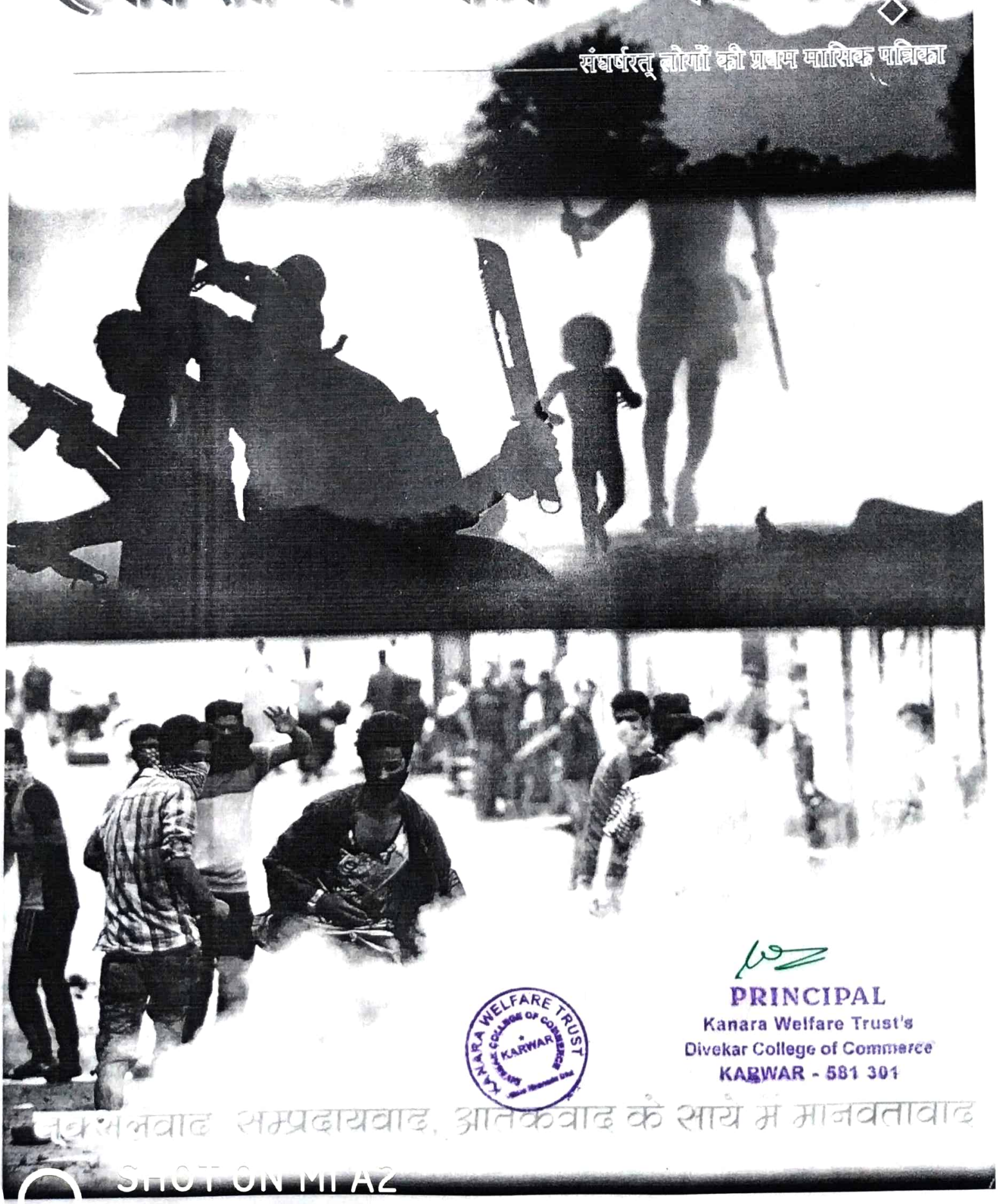

KANARA WELFARE TRUST
DIVEKAR COLLEGE OF COMMERCE
KARWAR

PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's
Divekar College of Commerce
KARWAR - 581 301

नक्सलवाद, सम्प्रदायवाद, आतंकवाद के साये में मानवतावाद

SHOT ON MI A2

अपना हौसला बुलन्द करना

नारी न समझ नाजुक नाजुक
भूल जा सारे सुख और दुःख
आए बाधाएं हजार तुझ पर
बनाए रख जीवन का रूख।

अरुणिमा भी एक नारी है
साहसी, पुरुषों पर भारी है
दरिन्दों की यहां कमी नहीं
पर नारी शक्ति भी कमी नहीं।

फेंका गया चलती रेल से
टूटे–पैर, टकराई अन्य रेल से
खुद को पाया अस्पताल में
फिर टूट गया अपने आप में।

फिर धीरज बांधी एक क्षण में
विकलांग बनी, मन था साहसी
हिमाचल चढ़ने की बनी प्यासी
बिना पैर के कैसे चढ़ेगी?

मुश्किल मंजिल कैसे छुएगी
सोचते रहे अपने–पराये
मर्द की बेटी न छोड़ा पीछा
अभ्यास पाया न रहा ओछा।

सरल पहुंची हिमाचल की चोटी
बन गई पहली विश्व की बेटी
न समझ तुझमें विपुल है न्यूनता
नारी तुझमें विपुल महानता।

तुम बदलोगी सारा विश्व समझना
तुम नहीं जग सारा सुना–सुना
एक शब्द तुम धैर्य का भरना
परम्परा का रूप नया बनाना
संध्या तुम कदम बढ़ाते करना
अपनी मंजिल आसान पाना।

श्रीमती संध्या दत्ता कदम
सम्पर्क : केनरा वेल्फेयर ट्रस्ट, दिवेकर कॉलेज ऑफ कॉमर्स, कोडीबाग, कारवार, जिला-उत्तर कन्नड-581352, कर्नाटक

हैरान हूँ

कोई अदृश्य शक्ति
कितना सम्भाला सजाया है!
पल दो पल, साथ निभाती
सहज बनाती, जीना सिखाती
समझ सकती हूं, समझा नहीं सकती
बस अनुभूतियों में,
जीने की आदम बन गई है!
ये छोटी–छोटी खुशियां,
जीवन पतवार बन गई है!

सच ही तो है

सच ही तो है
तुम बहुत बड़े हो गए हो
सिर्फ उम्र नहीं
पद और सम्मान में भी
अब तुम्हारी अपनी दुनिया
अपना संसार है
सम्पन्नता से भरपूर
कोई अभाव नहीं
यही तो मांगा था पल–पल
अपनी दुआओं में
तुम्हारे हर बढ़ते कदम के साथ
अब भी यही मांगते हैं
आदत जो बन गई है
ये सपने हमारे ही तो थे
यही तो मांगा था हर पल खुदा से
अब बस तुमसे चाहिए
थोड़ा–सा सम्मान
प्यार का एक सम्बोधन
सम्पन्न हैं हम अभी भी
दुआओं भरा, एक दिल
है हमारे पास
तुम्हारा सम्मान हैं हम
इसे संस्कार बना लो !

मुक्ता
सम्पर्क : सी-7/247, एसडीए, नवीन निकेतन, हौज खास, नई दिल्ली-110016

Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during the year 2017-18

Sl. No.	Name of the teacher	Title of the book/chapters published	Title of the paper	Title of the proceedings of the conference	Name of the conference	ISBN/ISSN number of the proceeding	Name of the publisher
8	Smt. Sandhya Kadam	NO	SABAKE SIR PAR BHAR HE	Hashiye ki awaz	NO	ISSN 2277-5331	INTEGRATED SOCIAL INSTITUTES 10 INSTITUTIONAL AREA LODHI ROAD, NEW DELHI
9	Smt. Sandhya Kadam	NO	MAA KI KAHANI	Hashiye ki awaz	NO	ISSN 2277-5331	INTEGRATED SOCIAL INSTITUTES 10 INSTITUTIONAL AREA LODHI ROAD, NEW DELHI
10	Smt. Sandhya Kadam	UPANYASKAR SHUSHEELA TAKBHOURE EVAM NARI ASMITA	NO	NO	NO	ISBN 978-81-89187-47-7	VINAY PRAKASHAN KANPUR UTTAR PRADESH

2017 कवर सहित पृ. सं. 44
ISSN 2277-5331

हाशिये की आवाज़

संघर्षरत् लोगों की प्रथम मासिक पत्रिका

मानवीय मूल्यों और हकों को मत कुचलो!

KANARA WELFARE TRUST
DIVEKAR COLLEGE OF COMMERCE
KARWAR

PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's
Divekar College of Commerce
KARWAR - 581 301

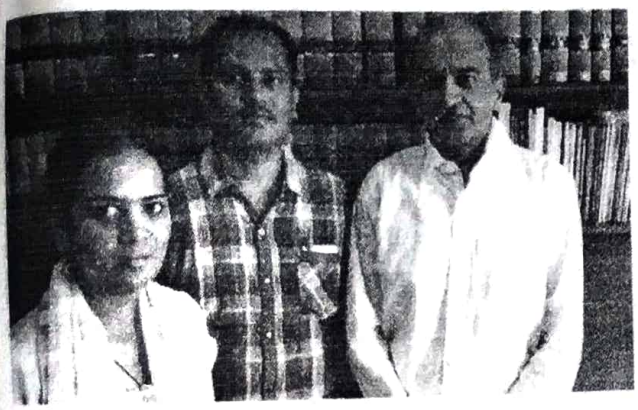

मिले, इसलिये उन्होंने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की है। बिना किसी परिचय के अधिवक्ता प्रशांत भूषण इस मामले में निःशुल्क पैरवी कर रहे हैं।

फिलहाल सुप्रीम कोर्ट में कार्रवाई जारी है, लेकिन वर्षा बस्तर में सुरक्षा बल के जवानों द्वारा आदिवासियों पर किए जा रहे कथित अत्याचार सम्बन्धी अपनी एक पोस्ट के लिए चर्चा में है। देश भर में उनके निलम्बन को लेकर बहस चल रही है। सोशल मीडिया में वर्षा डोंगरे छाई हुई हैं। सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता प्रशांत भूषण भी उनके पक्ष में खड़े दिखते हैं, तो पूर्व मुख्यमंत्री अजीत जोगी की पार्टी भी। मानवाधिकार कार्यकर्ता तो वर्षा के पक्ष में बयान दे ही रहे हैं।

छत्तीसगढ़ में कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष और विधायक भूपेश बघेल साफ कहते हैं, 'वो एक दलित की बेटी है, इसलिये उसे निलम्बित होना पड़ा। यहां सरकारी अफसर फेसबुक पर क्या–क्या नहीं लिखते। सरकार को कार्रवाई करनी है, तो नान घोटाले में करे, भ्रष्टाचार के मामलों में करे।'

स्रोत : आलोक पुतुल http://www.bbc.com/hindi/india-39836669

कवियों की पंक्तियां

गौ भक्त

बड़ा कष्ट देते हैं ये हिन्दू हमें
मरी गाय को हमसे उठवाते
जीते जी दूध, दही, माखन घी खाते
बड़े गर्व से वे कहते हैं
गौ माता हमारी,
मरने पर आती है बदबू सारी।
मरे जानवरों को हमसे उठवाते
उल्टा गौ हत्या का इलजाम लगाते।
राडो से पीटा, नंगा घुमाया
जीप से बांधकर सड़कों पर घसीटा
शर्म नहीं आती इन हरामखोरों को
जो सीना ताने कहते हैं गौ हमारी माता
मरी गाय को उठाने पर क्यों फटती है छाती
कहां गया तुम्हारा गौ सेवा सदन
कहां गया तुम्हारा हिन्दुत्व की शान
मारो नहीं यह गौ माता है,
सारे देवताओं का इनमें वास है
शर्म आती है तुम्हारे गौ भक्तों पर
तुम्हारे इस अंधविश्वास पर
तुम्हारे कुकर्मों पर
तुम्हारे देवी–देवताओं पर
और तुम्हारे धर्मशास्त्रों पर
जिनको तुम माता कहके पूजते हो
मरने पर कफन नहीं, माता को नंगा ही भेजते हो
छू नहीं सकते बदबू बहुत आती है
दलितों के सहारे किनारे लगाते हो
सुनों दलितों, अब होश में आओ
शिक्षा अपनाओ
मरे जानवरों को अब न उठाओ।

राजे । कुमार बौद्ध
सम्पर्क : डॉ. भीम राव अम्बेडकर पुस्तकालय एण्ड पब्लिकेशन, रामपुर नया गाँव, पो.-गोरखनाथ, जिला-गोरखपुर-273015, उत्तर प्रदेश

सब के सिर पर भार है

राजा के सिर पर प्रजा का भार है
सरकार के सिर पर सुविधा का भार है।
गरीब के सिर पर भूख का भार है
अमीर के सिर पर कमाने का अंधकार है।
सेना के सिर पर देश सुरक्षा का भार है
शिक्षक के सिर पर भविष्य का भार है।
नागरिकों के सिर पर नागरिकता का भार है
बच्चों के सिर पर मां का प्यार है।
सब के सिर पर भद्र देश का भार है
जंगल बढ़ाना हम सबका अधिकार है।
सबसे बढ़कर मानवता बढ़ाना सब पर भार है
बताओ किसके सिर पर वर्षा, निसर्ग का भार है।

श्रीमती संध्या दत्ता कदम
सम्पर्क : कंनरा वेल्फेयर ट्रस्ट, विवेकर कॉलेज ऑफ कॉमर्स, कोडीबाग, कारवार, जिला-उत्तर कन्नड़-581352, कर्नाटक

अक्टूबर 2017 वर्ष : 12 अंक : 10 कवर सहित पृ. सं. 44 ISSN 2277-5331

हाशिये की आवाज़

संघर्षरत् लोगों की प्रथम मासिक पत्रिका

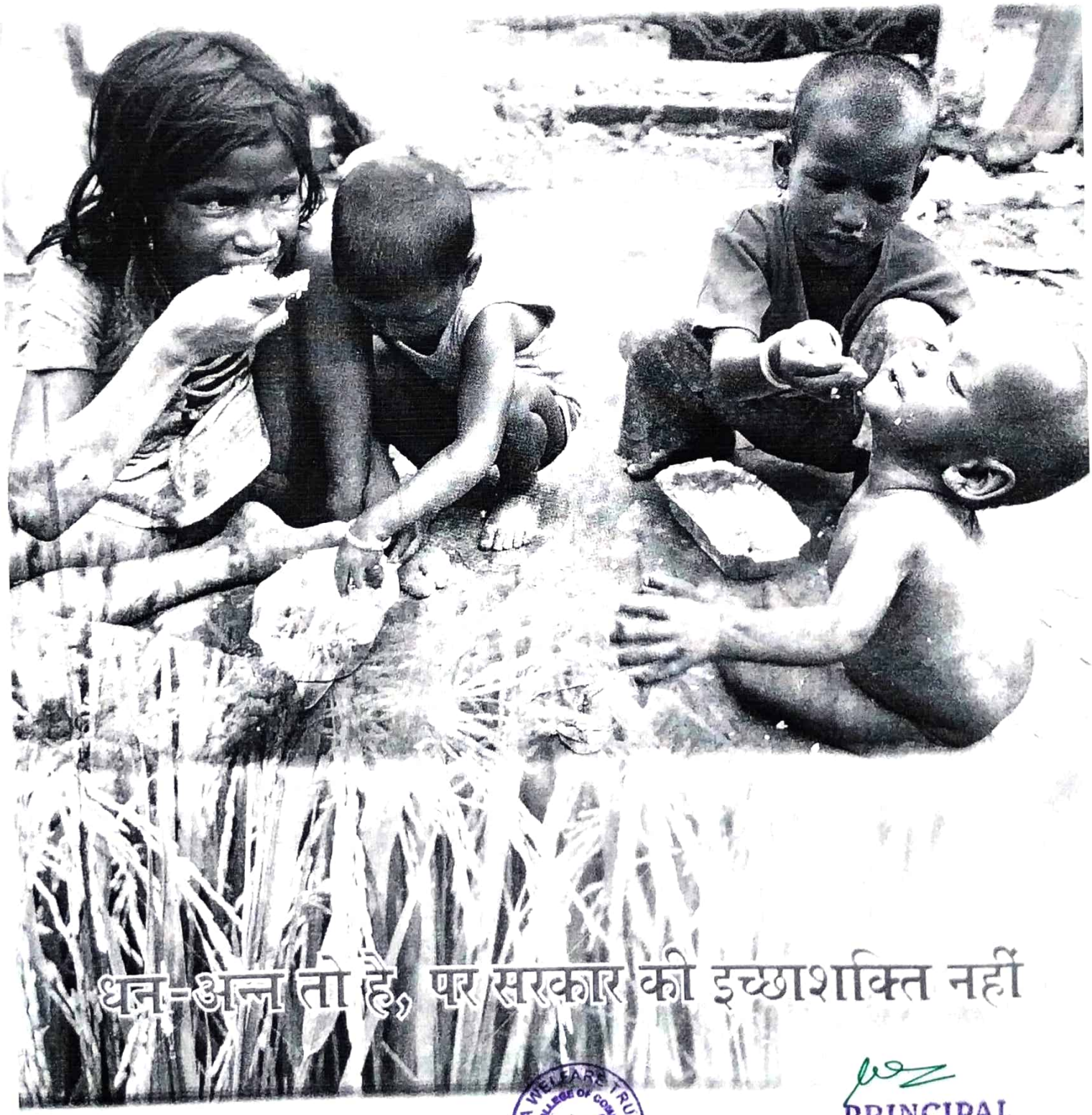

धन-अन्न तो है, पर सरकार की इच्छाशक्ति नहीं

KANARA WELFARE TRUST KARWAR DIVEKAR COLLEGE OF COMMERCE

PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's
Divekar College of Commerce
KARWAR - 581 301

निष्कर्ष

भारत को समृद्धि की ओर ले जाने में महिलाओं की भूमिका अतुलनीय है। महिलाएं स्वयं संगठित होकर सामाजिक एवं आर्थिक रूप से सक्षम बन रही हैं और देश को भी सुसंगठित एवं सशक्त बनाने में लगी हुई है। देश के विकास का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं हैं, जहां महिलाओं का योगदान न हो और बच्चों में व्याप्त कुपोषण को दूर करने और परिवार में सभी सदस्यों के स्वास्थ्य सुनिश्चित करने में महिलाओं का योगदान न हो। इन महिलाओं की सक्रियता काबिले तारीफ है।

शासन भी महिलाओं के सशक्तीकरण और बच्चों को कुपोषण से बचाने के लिए प्रतिबद्ध है। शासन के निरन्तर प्रयासों से बच्चों में कुपोषण का स्तर वर्तमान में घट गया है, कुपोषण में कमी के साथ ही शिशु मृत्यु–दर और मातृ मृत्यु–दर में भी भारी कमी आई है। महिला कल्याण की दिशा में श्रमिक महिलाओं के लिए भी सरकार ने कई महत्वपूर्ण फैसले लिए हैं। महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारण्टी योजना (मनरेगा 2003) में गर्भवती महिला श्रमिकों को मजदूरी सहित एक माह का अवकाश दिये जाने का प्रावधान किया गया है।

सरकारी स्तर पर इन परिवर्तनों के लिए लगातार निगरानी की आवश्यकता है और महिलाओं की स्थिति और समावेशित अधिकारों एवं विकास की प्रक्रिया में भागीदारी के लिए इसको पुनः परिभाषित करना होगा। यह हो सकता है कि जीवन के सभी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक असमानता, हिंसा, बहिष्कार, लैंगिक आधार पर उत्पीड़न आदि भेदभाव को समाप्त करने के लिए इसको बढ़ाया जा सकता है।

इसके अलावा असंगठित क्षेत्र की महिला श्रमिकों को निःशुल्क साईकिल और सिलाई मशीन भी दी जा रही हैं। बदलते समय के परिप्रेक्ष्य में देखें, तो गृहस्थी के साथ सामाजिक–आर्थिक क्षेत्र में भी लोगों का विश्वास अब महिलाओं के प्रति बढ़ा है। उपरोक्त की गई चर्चा योजनाओं की मदद से देश की हजारों महिलाएं सामाजिक एवं आर्थिक रूप से सक्षम बन चुकी हैं। महिलाओं के समग्र विकास के साथ उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए उपयुक्त वातावरण निर्माण और सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से महिला सशक्तीकरण नीति को और प्रोत्साहित करने की विशेष आवश्यकता है।

□□

विभागाध्यक्ष*सोशल साईंटिस्ट, महिला अध्ययन विभाग, भारतीय सामाजिक संस्थान।**
सम्पर्क : 10 इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003
ईमेल : sinha.arc@gmail.com, brrao.iitr@gmail.com

कवियों की पंक्तियां

मां की कहानी

माँ के दिल में ममता है पल पल
नयनों की पलकें हैं, प्रेम का आँचल,
चाहती हैं संतान का भविष्य उज्जवल
देती है आशीष, निश्चल निर्मल।
माता की महिमा के कौन गुण गाऊं
क्षण गुन लाख धून, नित्य मैं पाऊं,
पागल बन, भीगे नयन जब मैं रोऊं
बहता वक्ष, ऊरूजरस, मुख अमय पाऊं
मैं मां की महत्ता के क्या गुण गाऊं
सोचती, समझती मैं, माँ बन जाऊं
मां की विशालता, तब समझ पाऊं।
मेरी सोच गलत हुई, मैं यहां हार गई
तब भी मां की ममता, मैं नहीं समझ पाई
मां तो मां रही, मैं बेटी ही रह गई
मैं मां बनी, मां के लिए लाडली ही रह गई
कैसे जानूं मां का मरम चिन्ता में रह गई

मां बन मेरे तन–मन कोमल ही रह गये।
ज्ञान विज्ञान डाला छान, कछु न आया हाथ
ऐसी महिमा मां की है, कभी न छोड़े साथ
कल भी है, कल रहेगी, जान ले तू जानी!
नहीं कोई सुयोग्य कहने मां की मरम कहानी
सुन ले जानी मां की जुबानी वही कहे कहानी!
बने शूर वीर संतान, मां का आंचल संवारे
गद्दारों की छुट्टी कर दो, भारत मां उभारे।

श्रीमती संध्या दत्ता कदम
सम्पर्क : केनरा वेल्फेयर ट्रस्ट, विवेकर कॉलेज ऑफ कॉमर्स, कोड़ीबाग, कारवार, उत्तर कन्नड़-581352, कर्नाटक

उपन्यासकार सुशीला टाकभौरे

एवं नारी अस्मिता

संध्या दत्ता कदम

विनय प्रकाशन, कानपुर

विनय प्रकाशन

3A/128, हंसपुरम, कानपुर - 208021 (उ०प्र०)
0512-2626241, 09415731993
E-mail : vinayprakashankanpur@gmail.com
Website : www.vinayprakashan.com

ISBN 978-81-89187-47-7
9 788189 187477
₹ 350/-

उपन्यासकार सुशीला टाकभौरे एवं नारी अस्मिता संध्या दत्ता कदम

उपन्यासकार सुशीला टाकभौरे

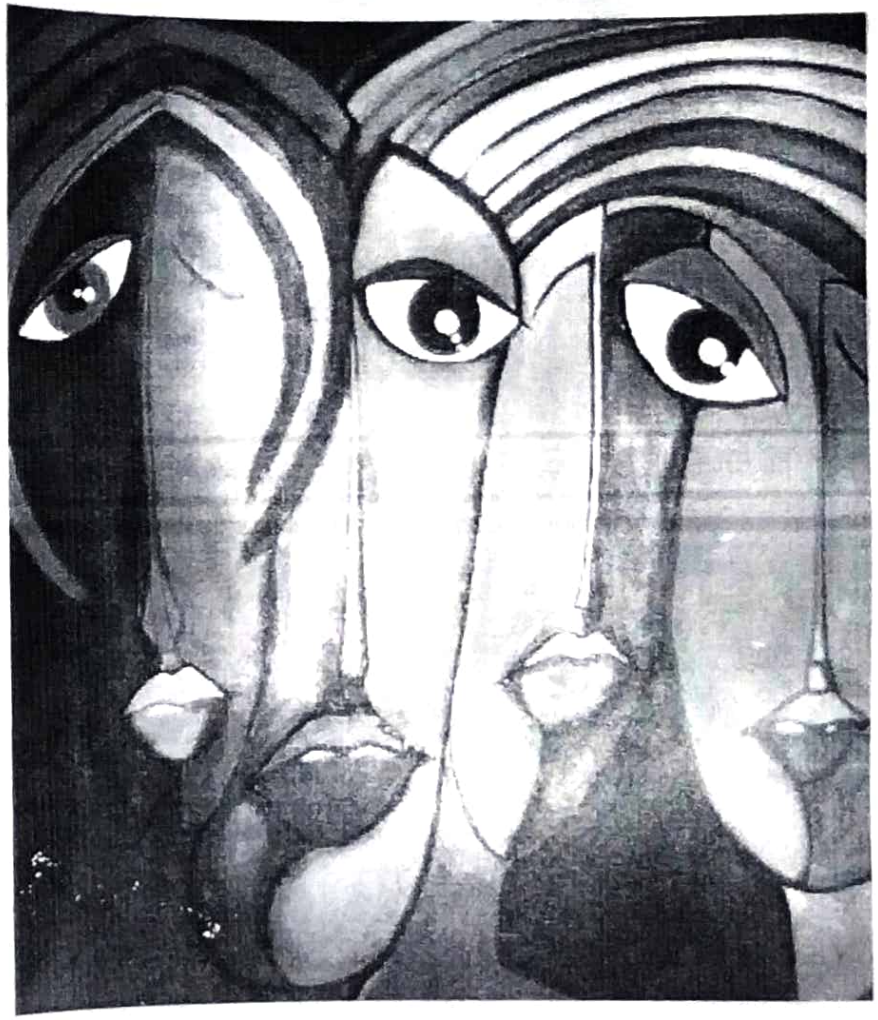

एवं नारी अस्मिता

संध्या दत्ता कदम

विनय प्रकाशन, कानपुर

KANARA WELFARE TRUST
DIVEKAR COLLEGE OF COMMERCE
KARWAR
PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's
Divekar College of Commerce
KARWAR - 581 301

अनुक्रम

- समकालीन हिन्दी दलित साहित्य में दलित नारी की स्थिति गति
- समकालीन हिन्दी दलित साहित्य में डॉ. सुशीला टाकभौरे का प्रदेय
- विवेच्य उपन्यास में नारी अस्मिता के विविध आयाम
- विवेच्य उपन्यास में दलित नारी की समस्याएँ
- विवेच्य उपन्यास की भाषिक संरचना

ISBN.: 978-81-89187-47-7

₹ 350/-

संध्या दत्ता कदम

जन्म : 22 जुलाई 1975, कारवार

शिक्षा : एम. ए., एम. फिल., बी.एड., डिप्लोमा इन कम्प्यूटर

सम्मान :

- प्रधानमंत्री जी द्वारा प्रशंसनीय पत्र प्राप्त
- 'हिन्दी साहित्य शिरोमणी' सुरभि साहित्य संस्कृति अकादमी खण्डवा (म.प्र.) द्वारा प्राप्त
- 'शाहिद कला सम्मान परिषद' से अनेक मानद उपाधियाँ- काव्यसुमन, काव्यश्री, विश्वकाव्य पद्मश्री, कर्नाटक रत्न
- प्रथम प्रकाशन सुजानपुर पठानकोट से काव्य-कुमुद सम्मान
- एन. एम. एफ. आई. अवार्ड- 2016 ऋषिकेश, देहरादून (उत्तराखण्ड)
- महाकवि जयशंकर प्रसाद स्मृति सम्मान

प्रकाशन :

- अनेक कविताएँ मासिक पत्रिका 'हाशिये की आवाज' दिल्ली।
- 'आश्वसत' भारतीय दलित अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की मासिक पत्रिका
- हिन्दी प्रचार वाणी बैंगलोर कर्नाटक आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित।

संप्रति : दिवेकर कॉमर्स कालेज
कोडिबाग, कारवार - 581301
उत्तरकन्नड, कर्नाटक
संपर्क : 09448796762

ISBN : 978-81-89187-47-7

पुस्तक : उपन्यासकार सुशीला टाकभौरे एवं नारी अस्मिता

लेखिका : संध्या दत्ता कदम

कॉपीराइट : लेखिकाधीन

प्रकाशक : **विनय प्रकाशन**

3ए/128, हंसपुरम्, कानपुर-208021

सम्पर्क : 0512-2626241, 09415731903

vinayprakashankanpur@gmail.com

Website : www.vinayprakashan.com

संस्करण : प्रथम, 2017

शब्द सज्जा : विष्णु ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक : श्रीपूजा प्रिण्टर्स, कानपुर

मूल्य : 350.00 रुपये

Upanyaskar Shusheela Takbhoure Evam Nari Asmita

Author : Sandhya Datta Kadam

Price : Three Hundred Fifty Only.

Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during the year 2016-17

Sl. No.	Name of the teacher	Title of the book/chapters published	Title of the paper	Title of the proceedings of the conference	Name of the conference	ISBN/ISSN number of the proceeding	Name of the publisher
11	Dr. B R Tole	NO	An Appraisal on Achievements of Cyclists from Bijapur District of Karnataka	INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL	NO	ISSN NO : 2230-7850	INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL, SOLAPUR, MAHARASHTRA.
12	Smt. Sandhya Kadam	NO	JAN CHOD DENGE	Hashiye ki awaz	NO	ISSN 2277-5331	INTEGRATED SOCIAL INSTITUTES 10 INSTITUTIONAL AREA LODHI ROAD, NEW DELHI
13	Smt. Sandhya Kadam	NO	Vishwa Janani	AASHWASTA	NO	RNI NO. MPHIN/2002 /9510	PINKI SATYAPREMI, BHARATIYA SAHITYA ACADEMY UJAIN MADHYAPRADESH
14	Smt. Sandhya Kadam	NO	BHARAT MAA KI SHAN BACHAO	AASHWASTA	NO	RNI NO. MPHIN/2002 /9510	PINKI SATYAPREMI, BHARATIYA SAHITYA ACADEMY UJAIN MADHYAPRADESH
15	Smt. Sandhya Kadam	NO	MANVATA	AASHWASTA	NO	RNI NO. MPHIN/2002 /9510	PINKI SATYAPREMI, BHARATIYA SAHITYA ACADEMY UJAIN MADHYAPRADESH

16	Smt. Sandhya Kadam	NO	APANA HAUSLA BULAND KARNA	Hashiye ki awaz	NO	ISSN 2277-5331	INTEGRATED SOCIAL INSTITUTES 10 INSTITUTIONAL AREA LODHI ROAD, NEW DELHI
17	Smt. Sandhya Kadam	NO	MANVATA	Hashiye ki awaz	NO	ISSN 2277-5331	INTEGRATED SOCIAL INSTITUTES 10 INSTITUTIONAL AREA LODHI ROAD, NEW DELHI
18	Smt. Sandhya Kadam	NO	GHAAV	AASHWASTA	NO	RNI NO. MPHIN/2002/9510	PINKI SATYAPREMI, BHARATIYA SAHITYA ACADEMY UJAIN MADHYAPRADESH
19	Smt. Sandhya Kadam	NO	BALIDAN	Hashiye ki awaz	NO	ISSN 2277-5331	INTEGRATED SOCIAL INSTITUTES 10 INSTITUTIONAL AREA LODHI ROAD, NEW DELHI
20	Smt. Sandhya Kadam	NO	BALIDAN	HINDI PRACHAR VANI	NO	RNI NO. KARHIN/2009/29806	KARNATAKA MAHILA HINDI SEVA SAMITHI CHAMARAJ PETE BANGLORE
21	Smt. Sandhya Kadam	NO	Vishwa Janani	HINDI PRACHAR VANI	NO	RNI NO. KARHIN/2009/29806	KARNATAKA MAHILA HINDI SEVA SAMITHI CHAMARAJ PETE BANGLORE

22	Smt. Sandhya Kadam	NO	AMAR HI RAHANA	HINDI PRACHAR VANI	NO	RNI NO. KARHIN/2009/29806	KARNATAKA MAHILA HINDI SEVA SAMITHI CHAMARAJ PETE BANGLORE

Vol 6 Issue 9 October 2016 ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's
Divekar College of Commerce
KARWAR - 581 30

ISSN: 2230-7850 Impact Factor :4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 9 | October - 2016

Indian Streams Research Journal

AN APPRAISAL ON ACHIEVEMENTS OF CYCLISTS FROM BIJAPUR DISCTRICT OF KARNATAKA

Mr. Tole Babasab Ramachandra[1] , Dr. GajananaPrabhu B.[2] and Dr. Prakash S. M.[3]

[1]Research Scholar , Department of P. G. Studies and Research in Physical Education , KuvempuUniversity, Shankaraghatta .

[2]Assistant Professor,Department of P. G. Studies and Research in Physical Education, Kuvempu University, Shankaraghatta .

[3]Director of Physical Education ,Kuvempu University, Shankaraghatta .

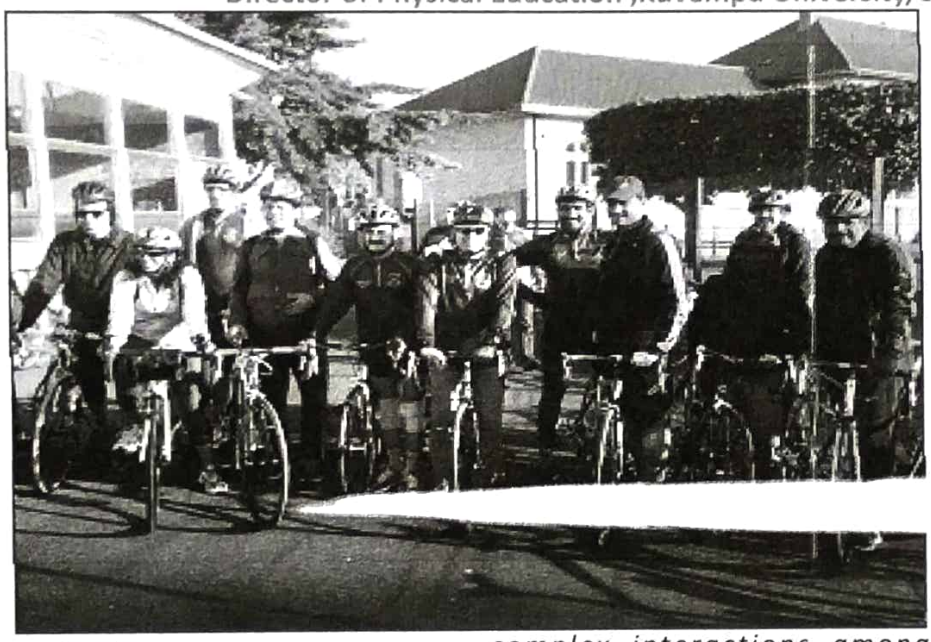

ABSTRACT

Sports indeed are a powerful tool for stimulating national pride and integration, for enhancing community spirit and for improving the health and productivity of the nation. The present position of India in sports, with an exception of cricket, is pitiable. Karnataka State has always been in the limelight when it comes to the performance and passion for sports. Cycling is one of the world's great physical activities involving individuals of and different abilities. Cycle Sport is a physical activity that is competitive in nature using bicycles. The acquisition of expertise in sport is the result of complex interactions among biological, psychological, and sociological constraints. Bijapur is the cycling capital of Karnataka state. Bijapur District has gifted valuable cyclists to Karnataka state who have brought laurels to the State as well as Nation. Cycling has become a part and parcel of peasants of Bijapur District and cycle races have become common in most of the annual fairs held in villages of this region. The purpose of the study was to analytically investigate the performance of Bijapur District in competitive cycling.The researcher in his frequent visits to Karnataka Amateur Cycling Association office at Bijapur collected necessary information in the form of primary and secondary sources. The results regarding performance of cyclists at National Road Cycling Competitions were effectively expressed through charts. The contributions of cyclists of Bijapur District is elaborated in the present article. The contribution of cyclists from Bijapur District is immense to the cycling sport at State as well as National level. The contributions are duly recognized and needs further support for improvement from public as well as private sectors.

KEYWORDS: *Sport, Cycling, Bijapur District, Karnataka, National Road cycling competition.*

INTRODUCTION

Sports indeed are a powerful tool for stimulating national pride and integration, for enhancing community spirit and for improving the health and productivity of the nation. Similarly, youth are the pillar of strength of any nation. Sport is not treated as

a luxury by the Government but rather an important investment in the present and future of the society.Sport has traditionally had a marginal status and has not been considered as an important tool for development. However, the power and potential of sport has increasingly been recognized by the international development community. In particular, sport has been recognized as a viable and practical tool to assist in the achievement of the Millennium Development Goals. In spite of various policy efforts and programmes, India is still lagging behind its counter-parts as a sporting nation.

The present position of India in sports, with an exception of cricket, is pitiable. The recently concluded Summer Olympic games gives a clear picture of the status of sports in India. The dismal performance put forward by India at various International sporting events makes it necessary to conduct further investigations to improve the status of sports in India. Improving the status of Indian sports persons through systematic studies is the need of the hour.

Karnataka State has always been in the limelight when it comes to the performance and passion for sports. In addition to the achievements in cricket, Karnataka has given many sporting champions in sports like swimming, badminton, tennis, etc. The sporting culture in the state is helmed by the Department of Youth Empowerment and Sports (Government of Karnataka, 2012).

Cycling is one of the world's great physical activities involving individuals of and different abilities. cycling is participated in and loved by millions around the globe for transportation, recreation, or competitive sport, as BMX, Road, Mountain Bike or Track, for able-bodied or Paracycling athletes. Cycle Sport is a physical activity that is competitive in nature using bicycles. It includes different categories such as road bicycle racing, mountain biking, time trialling, cyclo cross, track cycling, cycle speedway and BMX. Cycling as a sport officially began on May 31, 1868, with a 1,200-metre (1,312-yard) race between the fountains and the entrance of Saint-Cloud Park (near Paris). The winner was James Moore, an 18-year-old expatriate Englishman from Paris.

According to data obtained from the Karnataka Amateur Cycling Association, there has been a drastic fall in the number of cyclists which has subsequently affected the number of medals won at national level in the road cycling championship (Aditya, 2015). Passion for cycling has provided many job opportunities to rural cyclists from Karnataka in various departments like the Railways, Police, LIC, and in the Forest Department under sports quota. Some of the international and national repute cyclists like R N Attar, NijjappaYentettu, Vijay Singh Rajputh, SabuGaniger, LaxmanTeradal and KaveriBanakar are working at Bagalkot and Bijapur stations of South Western Railways.

The acquisition of expertise in sport is the result of complex interactions among biological, psychological, and sociological constraints (Singer & Janelle, 1999). Successful negotiation of these constraints can lead to the highest levels of performance while unsuccessful negotiation can lead to burnout and/or dropout from sport (Wiersma, 2000)

Scientific research has concluded that it takes eight to twelve years of training for a talented athlete to reach elite levels (Bloom, 1985; Ericsson et al., 1993; Ericsson and Charness, 1994). This is called the ten year or 10,000 hour rule. For athletes, coaches and parents this translates as slightly more than three hours of practice daily for ten years (Salmela, 1998). Unfortunately, parents and coaches in many sports still approach training with an attitude best characterized as the "peaking by Friday" approach (Balyi and Hamilton, 1999).

A specific and well-planned training, competition and recovery regime will ensure optimum development throughout an athlete's career. Ultimately success comes from training and performing well over the long-term rather than winning in the short term. There is no short cut to success in athletic preparation. Rushing competition will always result in shortcomings in physical, technical, tactical and mental abilities.

Bijapur is the cycling capital of Karnataka state. Bijapur District has gifted valuable cyclists to Karnataka state who have brought laurels to the State as well as Nation.Cycling has become a part and parcel of peasants of Bijapur District and cycle races have become common in most of the annual fairs held in villages of this region. The purpose of the study was to analytically investigate the performance of Bijapur District in competitive cycling.

METHODOLOGY

The researcher in his frequent visits to Karnataka Amateur Cycling Association office at Bijapur collected necessary information in the form of primary and secondary sources. Observation technique was also utilized in order to analytically examine information obtained regarding growth, development and achievement of cycling in Bijapur District.

Most reliable and authentic e-sources were also gathered through web. Official website of Cycling Federation of India was browsed in order to gather relevant information. Newspaper clippings were also helpful in testing the duly formulated hypotheses. In most of the cases the researcher personally collected data and in some exceptional cases helper was made use of.The results regarding performance of cyclists at National Road Cycling Competitions were effectively expressed through charts.

FINDINGS

• In the past two decades starting from 1993 till 2015, about 300 cyclists have participated in more than 40 National level competitions secured 259 medals in total including 96 gold medals, 78 silver medals and 82 bronze medals. The information is depicted in table 1.

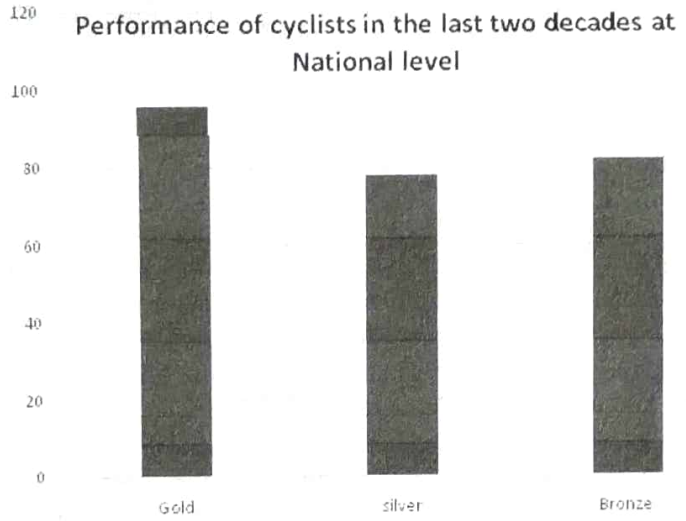

The cyclists of Bijapur District have excelled very well in Road cycling. Since there is no veledrome in this region, cyclists rely upon road for practice as well as competition. Medal tally of cyclists of Bijapur in National Road Cycling Championships in last six year based on the data obtained from Karnataka Amateur Cycling Association is given in Table 2.

Medal tally of cyclists of Bijapur in National Road Cycling Championships in last five years

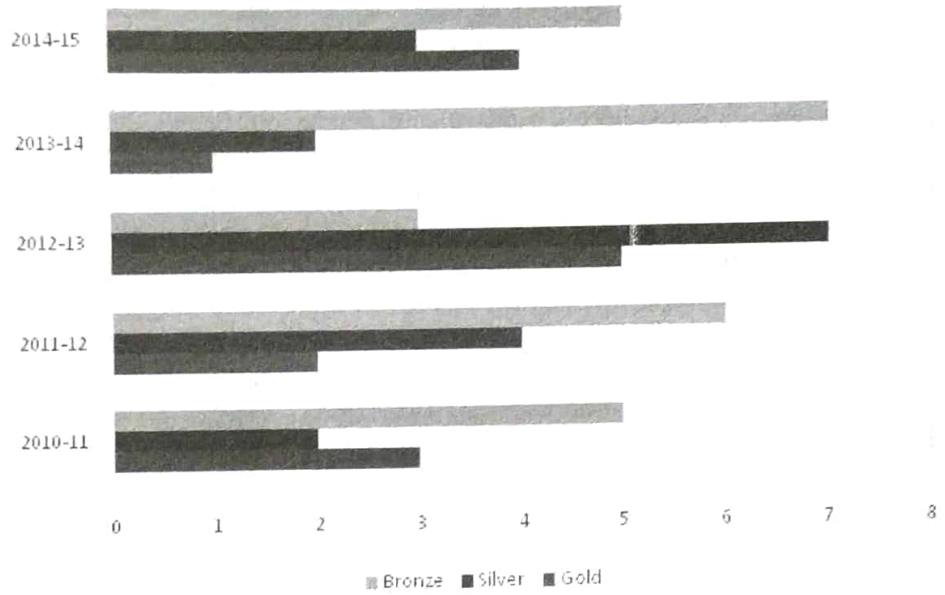

• Among the few cyclists receiving prestigious Ekalavya award bestowed by Government of Karnataka, majority are from Bijapur District. Names include PremalathaSureban (2001), SavithaAneppanavar (2002), Gangu G Biradar (2003), NeelammaMalligewada (2005), Savitha N Goudar (2006), Kaveri R Banakar (2007), SabuIshwarGaniger (2010), ShreedharaSavanur (2013), LaxmanKurni (2016) etc.

• Karnataka Olympic Association has honored many cyclists from Bijapur District. Names include Gangu G Biradar, Kaveri R Banakar, Savitha N Goudar, LakkappaKurni, GeetanjaliJoteppanavar, LaxmanKurni, SabuIshwarGaniger and SangameshTalavar.

• C. M. Kurni from Bijapur District was honored with Life Time Achievement Award by Government of Karnataka in 2012 for his remarkable achievement for the promotion of Cycling in Karnataka.

• More than 150 cyclists have secured jobs under sports quota in Railway, services etc.

• In recent years' male cyclists from Bijapur District like LaxmanKurni, Santhosh Kurni, YallappaShirabur, SandeshUppar, Ashif Attar, MallikRehan Attar, Krishna Naikodi, Raju Bhati, MalappaMurtannavar, Raju Kurni, RamappaAmbi, Nagappa Mardi, Sharanappa R E, AnandDandin, ShekarBellubbi, SangameshTalavar, Manjunath S Bellubbi, Shreeshail B Layannavar have brought laurels to Karnataka as well as our Nation.

• In recent years' female cyclists from Bijapur District like MeghaGugad, RenukaDandin, SeemaAdagal, SahirabanuLodhi, GeetanjaliJoteppanavar, ShailaMatyal, ShrideviNikkam, PremaGunadal, ArathiBhati have brought laurels to Karnataka as well as to our Nation.

CONCLUSION

The contribution of cyclists from Bijapur District is immense to the cycling sport at State as well as National level. The contributions are duly recognized and needs further support for improvement from public as well as private sectors.

REFERENCES

1.Singer, R. N. &Janelle,C.M.(1999)Determiningsportexpertise:FromgenestoSupremes. International Journal of Sport Psychology, 30,117–150.

2.Wiersma,L.D.(2000).Risksandbenefitsofyouthsportspecialization:Perspectivesand recommendations.

Pediatric Exercise Science, 12, 13–22.
3.Bloom, B. Developing Talent in Young People. New York: Ballantines, 1985.
4.Ericsson, K.A. and Charness, N. Expert Performance. Its Structure and Acquisition. American Psychologist, August 1994., pp. 725-747.
5.Ericsson, K.A., Krampe, R.Th. and Tesch-Romer. The role of deliberate practice in the acquisition of expert performance. Psychological Review, 1993, 100. pp. 363-406.
6.Salmela, J.H., Young, B.W. and Kallio, J. "Within-career Transitions of the Athlete-Coach-Parent Triad." In Wylleman< p. and Lavallee, D., (Eds.) Career transitions in sport: A sourcebook for practitioners and researchers. Morgantown, VA: FIT Publications, 1998.
7.Balyi, I. and Hamilton, A. "The FUNdamentals in Long-term Preparation of Tennis Players." pp. 250, in Bollettieri Classic Tennis Handbook, Tennis Week, NY, NY, 1999. pp. 258-280.
8.SangameshMenasinakai (2015) "Haven of cycling rides on flat tyres", Online article retrieved from The Times of India, at http://timesofindia.indiatimes.com/city/bengaluru/Haven-of-cycling-rides-on-flat-tyres/articleshow/46423854.cms
9.SangameshMenasinakai (2011) "Where cycling is a tradition", Online article retrieved from The New Indian Express, at http://www.newindianexpress.com/states/karnataka/article476961.ece
10.Kamathar, G. S. (2014) "CyclistsgalaKoralige 239 Padaka", Article published in Hubli edition of Udayavani on 09-06-2014.
11.Aditya Rao, K. S. (2015) "Race of fate uncertain for state cyclists", masters project report submitted to The Indian Institute of Journalism & New Media retrieved on 17-06-2016 at http://www.iijnm.org/mastersproject2015/jamkhandi-race-of-fate-uncertain-for-state-cyclists%20-2015.html
12.Government of Karnataka (2012) "Sports Development", Pre-Feasibility Report submitted to Infrastructure Development Department on Institutional Strengthening & Sector Inventory for Public-Private-Partnership Mainstreaming in Education by ICRA Management Consulting Services Limited.

Mr. Tole Babasab Ramachandra
Research Scholar ,
Department of P. G. Studies and Research in Physical Education ,
KuvempuUniversity, Shankaraghatta .

ISSN 2277 - 5331

हाशिये की आवाज़

संघर्षरत् लोगों ... पेक पत्रिका

जनवरी 2016 | वर्ष : 11 | अंक : 01 | कवर सहित पृष्ठों की सं. 44

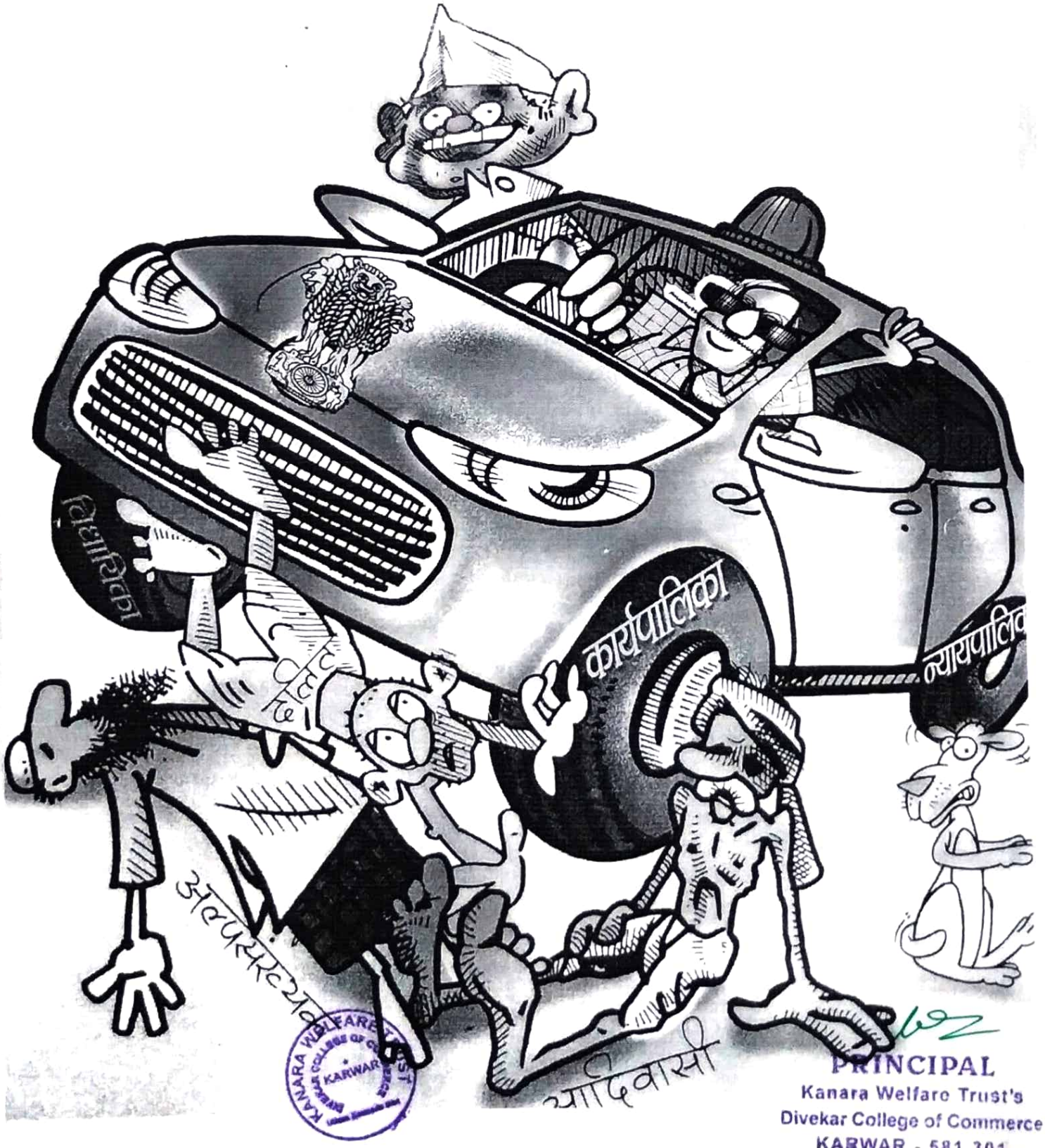

KANARA WELFARE TRUST
DIVEKAR COLLEGE OF COMMERCE
KARWAR

PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's
Divekar College of Commerce
KARWAR - 581 301

रहा? यदि इसकी वजह जानें तो वह छोटी-सी है।

दूरदर्शन और आकाशवाणी के अधिकारियों की नियुक्ति, तबादले, पदोन्नति यानी सभी अधिकार सरकार के हाथ में है। जाहिर है, सरकार को मिले यही अधिकार उसे निरंकुश बनाते हैं। वह इन अधिकारों की आड़ में अपनी मनमानियां करती है। सच बात तो यह है कि जब तक दूरदर्शन के अधिकारियों की नियुक्ति, तबादले, पदोन्नति के अधिकार सरकार के हाथ में रहेंगे, तब तक प्रसार भारती के गठन का मकसद पूरा नहीं हो सकेगा। वित्तीय जरूरत के मुताबिक सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय पर प्रसार भारती की निर्भरता खत्म होने के बाद ही वह पूरी तरह से स्वायत्त हो पाएगी। प्रसार भारती की स्वायत्तता की रक्षा के लिए यह भी जरूरी है कि उसे नियुक्तियों और तबादलों के अधिकार दिए जाएं। सरकार से इसके संबंध वैसे ही हों, जैसे नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक के हैं। लेकिन यह काम इतना आसान नहीं। खासतौर से मोदी सरकार के कार्यकाल में यह काम हो पाएगा, इसकी संभावना कम ही लगती है।

कुल मिलाकर प्रसार भारती ने राजनीतिक दबाव के चलते जिस तरह से मोदी सरकार के आगे अपने घुटने टेके हैं, वह सचमुच चिंता का विषय है। यह पूरा मामला सरकारी प्रसारण सेवा का सीधा-सीधा दुरुपयोग है। सरकारी पैसे से चलने वाला राष्ट्रीय चैनल आर. एस.एस के सरसंघचालक के भाषण को इतनी अहमियत दे, यह एक खतरनाक रुझान है और यह अंदेशा पैदा करता है कि दूरदर्शन का ऐसा इस्तेमाल आगे भी हो सकता है यानी खतरे की यह शुरुआत भर है। यदि देश की धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक ताकतें इन खतरनाक प्रवृतियों और चलन के खिलाफ खुलकर खड़ी नहीं हुईं, तो सरकारी प्रसारण माध्यमों का आगे भी गलत इस्तेमाल होगा। अगर ऐसा हुआ, तो भारत के लोकतांत्रिक, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष किरदार को बचाए रखना सचमुच मुश्किल काम होगा।

□□

लेखक-स्वतंत्र पत्रकार हैं।

सम्पर्क-महल कॉलोनी, शिवपुरी-473551, मध्य प्रदेश

ईमेल : jahidk.khan@gmail.com

कवयित्री की पंक्तियाँ

जान छोड़ देंगे

कश्मीर हमारा है
हमें जान से भी प्यारा है
जान छोड़ देंगे मगर कश्मीर नहीं।
न किया ऐसा मैं नारी ही नहीं
जवानों जरा तुम सामने आना
मर्दो देश का ताज बचाना
करो कुछ, न कि चुप्पी भर देना
नारी शक्ति को आजाद कराना
माँ, बहनों सुलोचनी बन सुधर जाना
अब समय आया है जंग छेड़ देना
गुलाम कश्मीर को आजाद है कराना।
बूढ़े, बच्चे, नारी जंग में कूद जाना
रुधीर बिछाकर वतन को जोड़ देना
अखण्ड रहे भारत सदा याद रखना
जन्म लिया भारत में धन्य समझना
वतन के ऋण से पहले मुक्त होना
जान छोड़ देना मगर कश्मीर नहीं छोड़ना।
माँ के चरणों में कुसुम शीश चढ़ाना
तिलक मिट्टी लगाकर जवाँ अमर बनना।

संध्या दत्ता कदम

सम्पर्क : बी.जी.वी.एस., प्री. आर्ट्स एण्ड कॉमर्स विश्वविद्यालय (बापूजी कॉलेज) पो.
-सदाशिवगढ, तह.-कारवार, जिला-उत्तर कन्नड़-581352, कर्नाटक

हाशिये की आवाज़ हेतु विज्ञापन की दरें

- प्रत्येक अग्रिम माह की 24 तारीख को प्रकाशन
- पत्रिका का आकार 27 सें.मी. x 19 सें.मी.
- प्रिंट क्षेत्र 24 सें.मी. x 15 सें.मी.

अंतिम पृष्ठ (बैक पेज) मल्टी-कलर

आधा पेज ₹ 3,000 प्रति एड (प्रतिवर्ष ₹ 33,000)

पूरा पेज ₹ 5,000 प्रति एड (प्रतिवर्ष ₹ 55,000)

अन्दर की तरफ पहला एवं अंतिम पेज (मल्टी-कलर)

आधा पेज ₹ 2,500 प्रति एड (प्रतिवर्ष ₹ 27,000)

पूरा पेज ₹ 4,000 प्रति एड (प्रतिवर्ष ₹ 44,000)

अन्दर की तरफ (ब्लैक एण्ड वाईट)

आधा पेज ₹ 1,500 प्रति एड (प्रतिवर्ष ₹ 16,500)

पूरा पेज ₹ 3,000 प्रति एड (प्रतिवर्ष ₹ 33,000)

प्रकाशक

इंटीग्रेटेड सोशल इनीशियेटिव्स, 10, इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली-110003.

ईमेल : publication@isidelhi.org.in

पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/9510

आश्वस्त

वर्ष 18, अंक 150

मार्च 2016

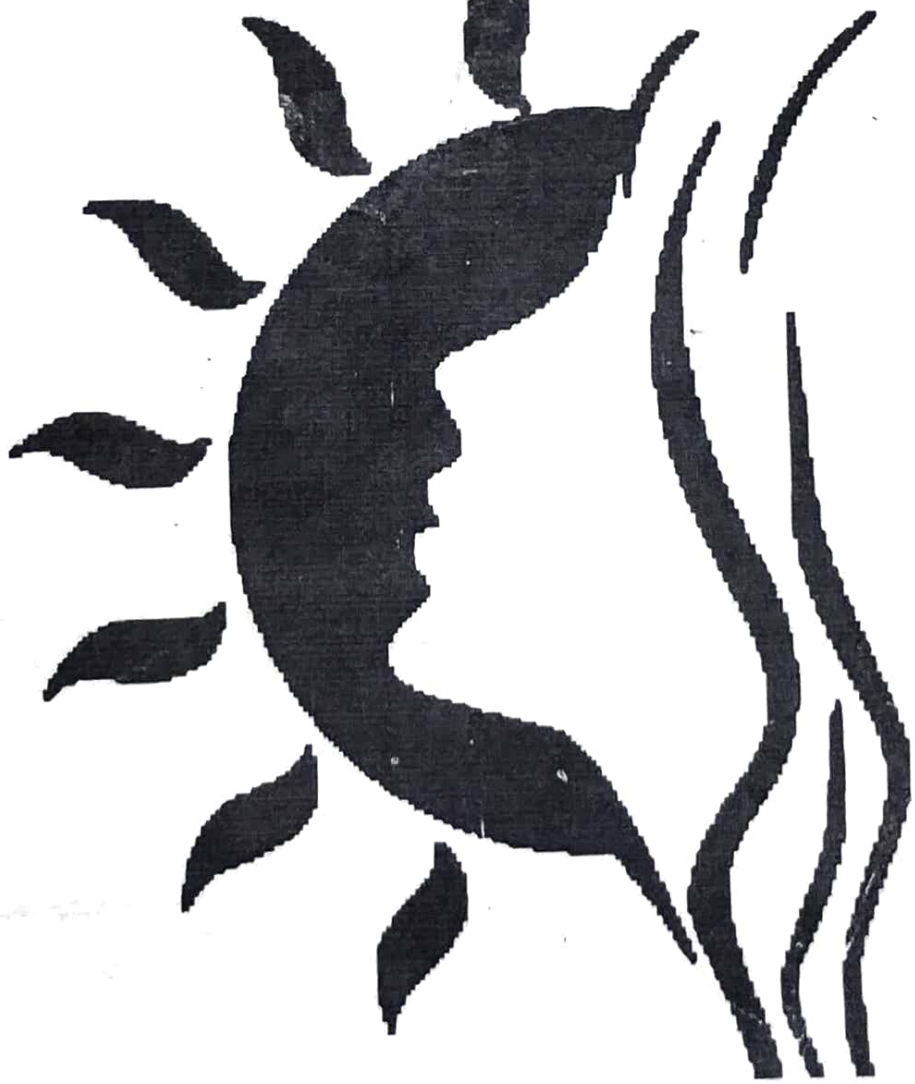

संपादक – कलावती परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की मासिक पत्रिका

PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's
Divekar College of Commerce
KARWAR - 581 301

है। मात्र मदर्स–डे मनाने से एक दिन अच्छा बोलने भर से माता–पिता को संतुष्ट करने की बात करना हास्यास्प्रद लगती है। सच्ची सेवा है मधुर वाणी, सम्मान, आज्ञाकारी बनना, पहले माता–पिता को भोजन कराकर बाद में भोजन करना एक गुणवान पुत्र की पहचान है। माता–पिता कभी भी श्राप नहीं देते क्योंकि उनके पास सिवाय आशीर्वाद के कुछ होता ही नहीं है। इसके बाद भी कन्याओं को अभिशाप समझने की हम भूल करते आ रहे हैं। उन्हें सम्मान दें आज की बालिका कल का भविष्य है। इसी की उंगली पकड़कर भावी संतान देश का गौरव बढ़ाती आयी है। माँ का सम्मान करें हम सब माँ की बगिया के फूल है मुस्कुराना हमारा हक़ है।

माता–पिता की सेवा सर्वोपरि सेवा है। यह हमारे ध्यान में हर वक्त समाया ही रहे।

23, अर्चना परिसर, उज्जैन
मोबा. 9926631925

कविताएँ

विश्व जननी

✍ संध्या दत्ता कदम

वेद, पुराण, बाइबल, कुरआन।
में दिया है मुझे बड़ा सम्मान।
हर धर्म ग्रन्थ में मैंने मुझे पाया।
पूजनीय बताया, तुम्हारा स्वार्थ दिखाया।
पर मुझ पर मुझे गर्व है।
नारी हूँ, नरक को स्वर्ग बनाना है।
सारे ब्रह्माण्ड को मुझे ही चलाना है।
आदम को हवा ने जगाया।
यशोदा ने कृष्ण को मक्खन खिलाया।
कौशल्या ने राम को दूध पिलाया।
गौतमी मे सिद्धार्थ को बुद्ध बनाया।
मरियम ने जिजस को शांति दूत बनाया।
सागर के पेट से मोती निकलते हैं।
मेरे गर्भ से विश्व ज्योति निकलती है।
बसवेश्वर, विवेकानन्द मेरे ही तो लाल हैं।
भगतसिंह, अब्दुल कलाम विश्व में विशाल हैं।
पुरुषों की जननी तेजस्विनी मैं हूँ।
वीरों की जननी जीजाऊ भी मैं हूँ।
मैंने तुम पर सब कुछ लुटाया।
तुमने मुझे देवी बनाकर मंदिर में बिठाया।
लक्ष्मी बनाया, दिल बहलाया।
धन, दौलत अपने हाथ लगा लिया।
सरस्वती बनाया, संगीत गवाया।
नर्तकी बनाकर मुझे ही नचाया।
नाच–नाचकर दिल बहलाया।
तुम्हारी बुरी नज़र मुझे धोखा ही देती आई।
स्वार्थी मानव संभाल अब तो।
मैं हूँ तो सारा जग शांत, प्रशांत है।
दुर्गा चण्डी, काली न बनाओ मुझे।
बस् विश्व जननी बनकर रहने दो मुझे।

सदाशिवगढ़, कारवार–58135
जिला–उत्तर कन्नड़ (कर्नाटक
मो. 0944879676

माँ गर्भ में मत मार

✍ बी.एल. परमा

माँ मेरे मन की सुन ले एक बार।
मुझे जन्म दे दे, गर्भ में मत मार।
मैं तेरी परछाई साथ रहूं साकार।
मत ठुकराए मैया कर मुझसे प्यार।
माँ जग देखन दे, बस एक बार।
मुझे जन्म दे दे, गर्भ में मत मार।

SHOT ON MI A2
MI DUAL CAMERA

पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/9510

आश्वस्त

वर्ष 18, अंक 155

अगस्त 2016

PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's
Divekar College of Commerce
KARWAR - 581 301

संपादक – कलावती परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की मासिक पत्रिका

भारत माँ की शान बचाओ

✍ श्रीमती संध्या दत्ता कदम

देश आग में जल रहा है।
तुम चैन से सो रहे
सोचो थोड़ा सा देश की प्रति,
अपनाएँ सब तेरी अच्छी नीति।
छात्र बनना एकलव्य जैसा,
नीति बनाना चाणक्य जैसा।
देश को तुमसे धोखा न हो।
देशवासियों से तुम पर गर्व हो।
देश का भविष्य तुम हो दोस्तों,
देश में सुख–शांति बढ़ाते जाना।
लोगों में देश प्रेम जगाते रहना
गद्दारों को सबक सिखाना।
देश के प्रति ईमानी बनना।
देश बचाओ यारों देश बचाओ,
भारत माता की शान बचाओ।

केनरा वेलफेयर ट्रस्ट, दिवेकर कॉलेज ऑफ कॉमर्स
कोडीबाग, कारवार–581301, जिला उत्तर कन्नड़
राज्य कर्नाटक, मोबा. 09448796762

✍ शकूर अनवर की दो ग़ज़लें –

(1)

बादल में रहता है सावन
धरती से उगता है सावन

आँखों में सोता है सावन
सपनों में बसता है सावन

गुल–बूटों की चादर ओढ़ी
बग़िया ने पहना है सावन

इसकी जलन अगन मत पूछो
साँपों सा डसता है सावन
दिल पर जब भी चोट लगी है
नयनों से बरसा है सावन

मेरे घर पतझड़ का मौसम
मुझ से क्यूँ रूठा है सावन

ख़ाली की ख़ाली है गागर
प्यासा का प्यासा है सावन

हरियाली छाई है ऐसी
अंधे को दिखता है सावन

हंस नहीं है फिर भी 'अनवर'
मोती ही चुगता है सावन

(2)

जीना भी दुश्वार है अपना
यह कैसा संसार है अपना

थोड़ी–सी ख्वाबों की पूँजी
छोटा सा व्यापार है अपना

जीवन ही उपवास में गुज़रा
हर दिन मंगलवार है अपना

सागर सी गहराई दिल में
पर्वत सा आकार है अपना

दहशत में दिन गुज़रा सब का
कहने को त्योहार है अपना

कश्ती है मँझधार में 'अनवर'
दरिया में घर बार है अपना।

शमीम मंज़िल, सेठानी चौक
श्रीपुरा, कोटा–324006 (राज.)
मोबा. 09460851271

पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/9510

आश्वस्त

वर्ष 18, अंक 153

जून 2016

हद तपै सो औलिया, बेहद तपै सो पीर।
हद बेहद दोनों तपै, ताको नांव कबीर॥

PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's
Divekar College of Commerce

संपादक – कलावती परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की मासिक पत्रिका

KANARA WELFARE TRUST
KARWAR

प्रेमयुक्त विचारों को अपनाया। सूफी मत से प्रेम, वैष्णव से भक्ति पथ, नाम पंथ से योग साधना। पूजा परिक्रमा ब्राह्माचरण खोखला निरूपित करते हुए कहते हैं –

जहाँ–जहाँ डोलौं सो पैकरमा जो कुछ करों सो सेवा
जब सोवों तब करौ दण्डवत पूजौ और न देवा।

यह भावना कबीर को उस सामाजिक धरातल पर ले आती है जहाँ एक स्वच्छ, निर्मल और विशुद्ध विचारों के समाज की स्थापना हो सकती। वर्तमान युग में ऐसे युगान्तकारी व्यक्तित्व की आवश्यकता है। हमारे मनीषियों के चिंतन, तपस्या के श्रम से संचित ज्ञान का कैसा पतन हुआ यह बात किसी से छुपी नहीं है। जिस युग ने कबीर जैसी विभूति दी वह आज के समान अनेक बुराइयों में लिप्त समाज था। आज भी वही युग है, मानवता का उत्पीड़न बयान करने पर मौत के फतवे और देश निकाले कट्टरवादी ताकतों द्वारा जारी किये जाते हैं। राजनैतिक आकाओं ने लूट, घोटाले, खुशामदी, स्वागती आदर्श हमारे समाज के समक्ष रखे और आँख बंदकर सारा समाज उन पद–चिन्हों पर चल पड़ा जिसका द्वार पतन के गर्त तक जाता है।

15, स्टेशन मार्ग, महिदपुर रोड
जिला उज्जैन (म.प्र.) मोबा. 98930 72718

कविताएँ

मानवता

डॉ. श्रीमती संध्या दत्ता कदम

मैंने सोचा था, हम सब मानव हैं।
किसी से मानवता का परिचय पूछती हूँ।
सबके सब गूँगें बन टुकुर–टुकुर देखने लगे।
एक–दूसरे को ताकने लगे,
संकेत और इशारा करने लगे।
कहने लगे,
यह मानवतावाद का परिचय
पूछनेवाला मानव,
हम लोगों में कैसा शामिल हुआ ?
हमसे मानवता दूर होकर
कई साल हो गये है ?
गांधी ने सिखाया था मानवता।
जय भीम ने बताया है सही रास्ता।
गौतम ने बताया है, सही भाईचारा
महावीर को था अहिंसा प्यारा।
शंकराचार्य की थी अपनी नीति।
चाणक्य की थी अपनी भक्ति।
अशोक ने सोचा भारत अखण्ड रहे।
शिवाजी ने सोचा नारी सदा महान रहे।
बसवेश्वर की भक्ति जाति की मुक्ति,
कुवेंपु, बेंद्रे करनाडु के शक्ति।
सुभाष, भगत तुम्हारे ही तो लाड़ले लाल है।
ओ मेरे प्यारे भाईयों, बहनों।
यह सारे भारत के पुत्र ही तो थे।
हम भी तो भारती के उदर से उबरे हैं।
फिर यह जात भेद का बवाल क्यों ?
छलकपट राजनीति का सवाल क्यूँ ?
गरीब अमीर सब महान ही तो हैं।
भूख सभी की समान ही तो है।
एक–दूसरे के दुःख को जानकर।
अभी तो मानवता पर उतर आओ।
भाई सभी जन समान है जरा जान जाओ।

मुक्का : गांवकरवाडा, अमदळळी, ता : कारवा
जि : उत्तर कन्नड, राज्य–कर्नाटक–58132

SHOT ON MI A2
MI DUAL CAMERA

ISSN 2277-5331

हाशिये की आवाज़

संघर्षरत लोगों की प्रथम मासिक पत्रिका

...016 वर्ष : 11

(अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष)

KANARA WELFARE TRUST
DIVEKAR COLLEGE OF COMMERCE
KARWAR

PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's
Divekar College of Commerce
KARWAR

परिवार में बच्चे कम हो। भारतवर्ष में खुशहाल परिवार के लिए प्रचलित परिवार नियोजन का नारा आजादी के बाद का है, परन्तु बाबा साहेब स्त्री के संदर्भ में परिवार नियोजन के फायदे बहुत पहले ही देख लिए थे। वे ये भी जानते थे कि इन सबके लिए देश के युवा वर्ग को समझाने एवं उसको साथ लेने से ही परिवार को खुशहाल बनाया जा सकता है। इसलिए उन्होंने 1938 में विद्यार्थियों की एक सभा में बोलते हुए कहा–'परिवार नियोजन की जवाबदेही स्त्री–पुरूष दोनों की होती है। बच्चों का लालन–पालन हम अच्छी तरह कर सकते हैं। कम संतान होने पर स्त्रियां अपनी शक्ति बाकी कामों में लगा सकती हैं।'[2]

स्त्रियों की समानता और स्वतंत्रता के संदर्भ में डॉ. अम्बेडकर बाकी चिंतकों एवं समाज–सुधारकों से काफी आगे की समझ रखते थे। अन्य समाज–सुधारक जहां नारी शिक्षा को परिवार की उन्नति एवं आदर्श मातृत्व को संभालने या नारी की स्त्रियोचित गुणों के कारण ही उसकी उपयोगिता पर बल देते थे, परन्तु नारी भी मनुष्य है, उसके भी अन्य मनुष्यों के समान अधिकार हैं, इस बात को स्वीकार करने में हिचकिचाते थे। उसकी इस मानवीय गरिमा को सर्वप्रथम आधुनिक युग में डॉ. अम्बेडकर ने ही स्थापित किया। वे चाहते थे कि पत्नी की स्थिति घर में दासी जैसी न होकर उसकी हैसियत बराबरी की हो। उन्होंने लड़कों के समान लड़कियों को पढ़ाने के साथ–साथ उसका विवाह भी उचित उम्र में हो, इस पर बार–बार जोर दिया।

इस विषय पर बोलते हुए डॉ. अम्बेडकर कहते हैं– 'शादी एक महत्पूर्ण जवाबदारी है। शादी करने वाली हर औरत को उसके पक्ष में खड़ा रहना चाहिए, लेकिन उसको दासी नहीं, बल्कि बराबरी के नाते या मित्र के तौर पर। यदि ऐसा करोगी, तो अपने साथ समाज का भी अभ्युदय करोगी और अपना सम्मान बढ़ाओगी। इस हेतु सभी स्त्रियों को पुरूष के बराबर हिस्सेदारी कर खुद को शासक की जमात बनाने हेतु प्रयास करना चाहिए।'[3]

डॉ. अम्बेडकर महिलाओं को समाज द्वारा दी गई उनकी भूमिकाएं मां, पत्नी, बहन एवं उसके स्त्रियोचित गुणों से इतर उन्हें पूर्ण स्वतंत्र, स्वस्थ एवं प्रगतिशील कर्मठ मानवी के रूप में देखते थे। उनके जीवन–दर्शन में निहित स्वस्थ, प्रफुल्लित, शिक्षित एवं सामाजिक सरोकारों में भागीदार दलित और गैर–दलित स्त्री अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान पर स्थापित थी।

सन्दर्भ

1. धनंजय कीर, अम्बेडकर–लाइफ एण्ड मिशन
2. देखें वही
3. देखें वही

□□

सम्पर्क : ए. डी.-118 **बी**, शालीमार बाग, दिल्ली-110088

ईमेल : anitabharti@gmail.com

कवि की पंक्तियाँ

अपना हौसला बुलन्द करना

नारी न समझ नाजुक नाजुक
भूल जा सारे सुख और दुःख,
आए बाधाएं हजार तुझ पर
बनाए रख जीवन का रूख।
अरूणिमा भी एक नारी है
साहसी, पुरुषों पर भारी है,
दरिन्दों का यहाँ कमी नहीं
पर नारी शक्ति भी कमी नहीं।
फेंका गया चलती रेल से
टूटे–पैर, टकराए अन्य रेल से,
खुद को पाया अस्पताल में
दिल टूट गया अपने आप में।
फिर धीरज बांधी एक क्षण में
विकलांग बनी, मन था साहसी
हिमालय चढ़ने की बनी प्यासी
बिना पैर के कैसे चढ़ेगी?
मुश्किल मंजिल कैसे छुएगी
सोचते रहे अपने–पराये,
मर्द की बेटी न छोड़ पीछा
अभ्यास पाया न रहा ओछा।
सरल पहुंची हिमालय की चोटी
बन गई पहली विश्व की बेटी।
न समझ तुझमें है न्यूनता
नारी तुझमें विपुल महानता,
तुम बदलोगी सारा विश्व समझना
तुम नहीं जग सारा सुना–सुना।
एक श्वांस तुम धैर्य का भरना
परम्परा का रूप नया बनाना
संध्या तुम कदम बढ़ाते जाना
अपना हौसला बुलन्द करना
अपनी मंजिल आसान पाना।

संध्या दत्ता कदम

सम्पर्क : बापूजी कला और वाणिज्य कॉलेज, सदाशिवगढ़, तह.-कारवार, जिला-उत्तर कन्नड-581352, कर्नाटक

ISSN 2277-5331

हाशिये की आवाज़

हाशिये के लोगों की प्रथम मासिक पत्रिका

जुलाई 2016 वर्ष : 11 कवर सहित पृष्ठों की सं. 44

PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's
Divekar College of Commerce
KARWAR - 581 301

इस कृति के माध्यम से लेखक ने दलितों की हालत के लिए ब्राह्मणवाद और पूंजीवाद को जिम्मेदार ठहराया है। देश की कम्युनिस्ट सरकारों, उनके विश्लेषण में जाति के सवालों को न सिर्फ दरकिनार किया गया, अपितु वर्ग के नाम पर की गयी राजनीति कम्युनिस्टों की सबसे बड़ी जातिवादी चाल थी। यही कारण है कि इन पार्टियों में दलितों का उचित प्रतिनिधित्व नहीं रहा है। साथ ही साथ, सी.पी.एम. सरकार द्वारा मरिचझापी में दलित संहार जातिवादी मार्क्सवाद का ज्वलंत उदाहरण है। कृति में विभिन्न विद्वानों के तर्कों से इस बात को स्थापित किया गया है कि दलितों के भीतर भी जातिवाद है और दलित महिलाओं के सवालों को आज ठण्डे बस्ते में नहीं डाला जा सकता। यह बात एक हद तक सही भी है। लेकिन लेखक इस बात पर ज्यादा जोर नहीं देते पाए कि दलितों के भीतर जो जातिवाद है, क्या उसे कथित सवर्णों या वैदिक जातिवाद के समतुल्य माना जाए? क्या तथाकथित ऊंची जातियों द्वारा किए गए दलित संहारों की नृसंशता और दलितों के आन्तरिक जातिवाद को एक पलड़े में रखा जा सकता है? लेखक इन सवालों को उठाने से बचते दिखे।

लेखक ने इस कृति में समाज वैज्ञानिक तुलसी राम और अर्थशास्त्री सुखदेव थोराट को छोड़कर सभी साहित्य से जुड़े लोगों पर ही अपना विश्वास जताया है। क्या किसी भी समाजशास्त्री को उन्होंने इस लायक नहीं समझा? दलित नारीवाद के समर्थक लेखक बजरंग बिहारी तिवारी यदि किसी महिला लेखिका/समाजसेविका का भी साक्षात्कार लेते, तो इसमें कोई हर्ज की बात न होती। □□

लेखक : जेएनयू में शोधार्थी हैं।

सम्पर्क : *अन्तरराष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-110067*

ईमेल : neetishaxalxo@gmail.com

कविता

मानवता

मैंने सोचा था, हम सब मानव है
किसी से मानवता का परिचय पूछी
सबके सब गूंगे बन टुकुर–टुकुर देखने लगे
एक दूसरे को ताकने लगे
संकेत और इशारा करने लगे।
कहने लगे,
यह मानवतावाद का परिचय
पूछने वाला मानव,
हम लोगों में कैसे शामिल हुआ?
हमसे मानवता दूर हुए
कई साल हो गये हैं।

गांधी ने सिखाया था मानवता
जय भीम ने बताया है सही रास्ता
गौतम ने बताया है सही भाईचारा
महावीर को था अहिंसा प्यारा
शंकराचार्य की थी अपनी **भक्ति**
चाणक्य की थी अपनी **नीति**।

अशोक ने सोचा भारत अखण्ड रहे
शिवाजी ने सोचा नारी सदा महान रहे
बसवेश्वर की भक्ति की मुक्ति
कुवेंपु, बेंद्रे करनाडु के शक्ति।

सुभाष, भगत तुम्हारे ही तो लाडले हैं
ओ मेरे प्यारे भाईयों, बहनों!
ये सारे भारत के पुत्र ही तो थे
हम भी तो भारती के उदर से उबरे हैं,
फिर यह जात भेद का बवाल क्यों?
छलकपट राजनीति का सवाल क्यों?
गरीब–अमीर सब महान ही तो हैं,
भूख सभी की समान ही तो है।
एक दूसरे के दुःख को जानकर
अभी तो मानवता पर उतर आओ।
हम सभी जन समान हैं जरा जान जाओ।

श्रीमती संध्या दत्ता कदम

सम्पर्क : *श्री मारुती आर गांवकर, मुक्का, गांवकरवाडा, अमदल्ली, तह.-कारवार, जिला-उत्तर कन्नड-581324, कर्नाटक*

पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/9510

आश्वस्त

वर्ष 19, अंक 156

सितम्बर 2016

PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's
Divekar College of Com

संपादक – कलावती परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की मासिक पत्रिका

KANARA WELFARE TRUST
KARWAR

एक पहली है जीवन

राजेन्द्र ग्रोवर

एक पहली गढ़ दी तूने
तो बात कहां पूर्ण होगी,
जब राज की बात जड़ दी तूने,
तो रात कहां पूर्ण होगी।

जब चांद भी आंख दिखाने लगा,
मेरा दिल भी भरमाने लगा,
ढूँढू मैं कैसे उन को,
तारों की बारात कहां पूर्ण होगी।
एक पहली.....

बिखरे मोती सम्भाले कैसे,
मनकों के लिए धागा चाहिए,
जब भटक गया राहों में,
फिर किस की सौगात पूर्ण होगी।
एक पहली.....

जीवन एक पहली है,
सम्भाल ले कुछ पलों को,
इधर परिवर्तित हो रही हर चीज
रूक जाने की फरियाद,
कहां पूर्ण होगी।

एक पहली गढ़ दी तूने,
तो बात कहां पूर्ण होगी।

770-71, हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी,
अम्बाला छावनी–133001 हरियाणा

घाव

श्रीमती संध्या दत्ता कदम

शरीर का घाव दिखता है, दिल का घाव छिपता है।
दोनों का दर्द सहता नहीं, यह कैसे भीषण पीड़ा है।
अपनों की बोली का घाव, तिरस्कृत जन–मन के भाव,
नजरों की कटार चलाया हुआ, अपमान का जहर पिलाया हुआ।
अपने–पराये सभी समय में, दर्द भरे जखम झेले है,
भाई–भामी ने ताना मारा, क्या औकात थी इसे हमने सवारा।
ऐसे वार किये, तीर से भी तीक्ष्ण, मरकर भी मैं जिंदा रही उस क्षण,
पति परमेश्वर मारूती मेरे बच्चों सा की सेवा मेरी।
ये न रहते, मैं कहाँ रहती ? मुर्दे के समान ढेर बन जाती,
क्रोधी है मानती उतने नहीं, कसाई बन जानवर काटता कही।
घाव अब मेरे बदलने लगे है, वैरत्व के भाव अब मिटने लगे है।
जीवन निरभ्र बना सुखी न भ्रांति,
सभी को माफ किया बदली ये नीति,
चलेंगे, अलविदा, हमें दीजिए अनुमति।

केनरा वेलफेयर ट्रस्ट, दिवेकर कॉलेज ऑफ कॉमर्स
कोडीबाग, कारवार–581352
जिला उत्तर कन्नड़, राज्य कर्नाटक
मोबा. 09448796762

शकूर अनवर की तीन ग़ज़लें –

(1)

तआल्लुक़ तुझ से यह कैसा पड़ा है
मुझे हर शख़्स की सुनना पड़ा है

लड़ूँगा फिर मुक़द्दर से मैं अपने
सितारों से नया झगड़ा पड़ा है

यह दुनिया इस कदर वीरॉ नहीं है
तेरी ऑखों पे ही पर्दा पड़ा है

चमकते हैं तेरी यादों के जुगनू
खण्डर दिल का कहॉ सूना पड़ा है

मकाने दिल–मेला ख़ाली न समझो
मगर इसमें अभी ताला पड़ा है

ISSN 2277-5331

हाशिये की आवाज़

संघर्षरत् लोगों की प्रथम मासिक पत्रिका

2016 वर्ष : 11 कवर सहित पृष्ठों की सं. 44

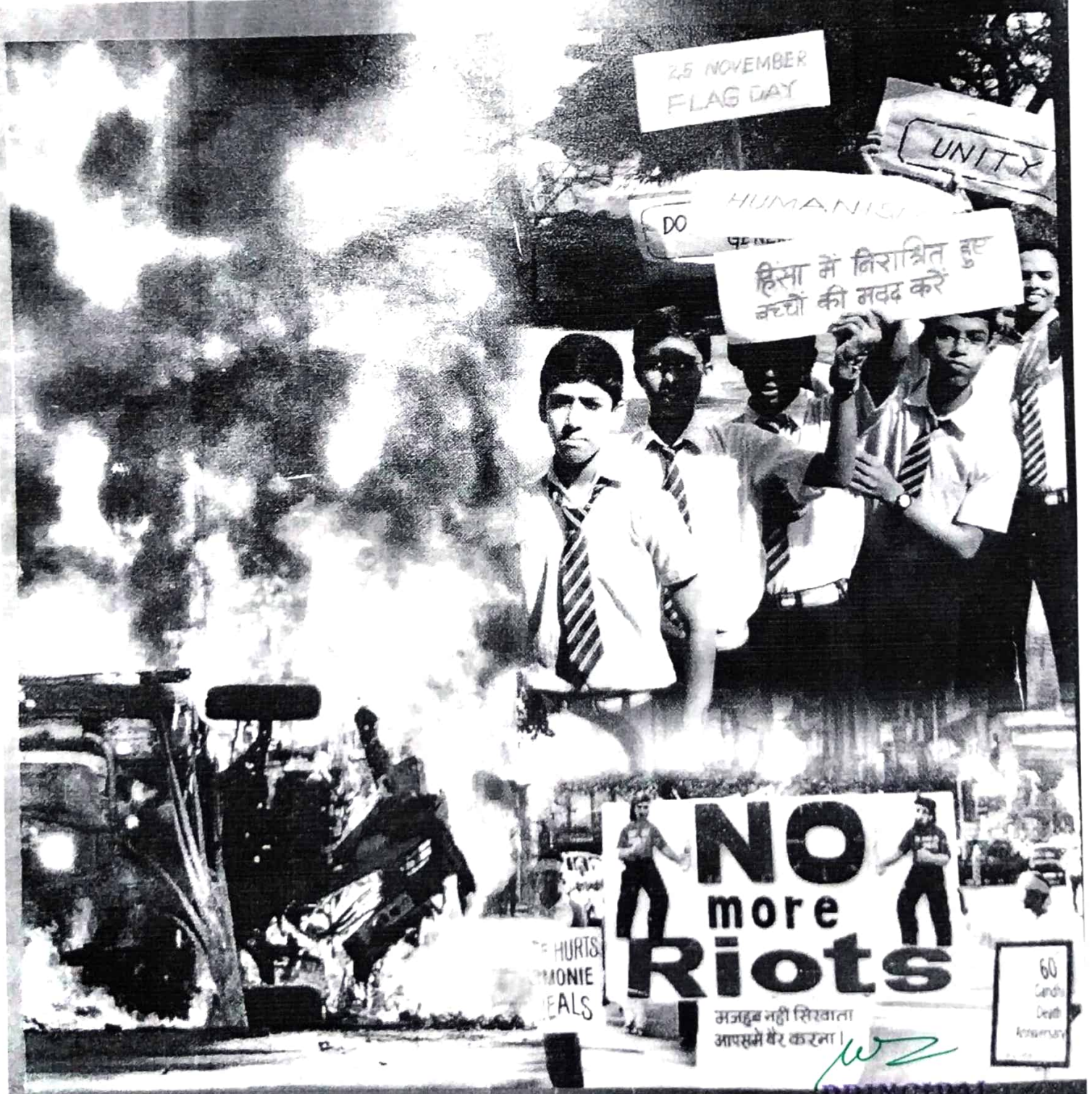

साम्प्रदायिकता की दहशत और सिसकती मानवीयता

PRINCIPAL
KARWAR - 581 301

बलिदान

वतन पर जान कुर्बान करेंगे,
माता भारती की शान बचायेंगे।
बहादुरो आगे बढ़ते जाना, दुश्मनों को मिटा देना
लहू बिछाये माता का मान बढ़ाते जाना
गद्दार न घुसपैठ करे, न सरहद पार करे
उन्हें चुन–चुनकर मारे, फिर कभी न निहारे।
अपने गुलिस्तान पर नाज करना,
अमन चैन से जीते रहना।

कश्मीर हमारा स्वर्ग है, आतंक कैसे फैलाएगा?
कहा नहीं सुनेगा तो, गोली खाकर मरेगा
हर सितम झेलकर भी मां तुझे हम बचायेंगे
सुरक्षा तेरी करते–करते, खुद की जान मिटा देंगे
दुश्मनों की मुंड उठाएंगे, तेरे चरणों में चढ़ाएंगे
लाख बाधाएं आने पर भी हम तुझे सजायेंगे
नादिर कितना होशियार रहे हम उसे मिटाएंगे।
हर पल तेरी याद में, हम अपनों से छुट जाएंगे
गम नहीं खुद मिटने से, हम कहेंगे अभिमान से
भारत माता अमर रहे वीरों के बलिदान से।

श्रीमती संध्या दत्ता कदम
सम्पर्क : केनरा वेल्फेयर ट्रस्ट, दिवेकर कॉलेज ऑफ कॉमर्स, कोडीबाग, कारवार, जिला–उत्तर कन्नड़–581352, कर्नाटक

ग़ज़लें–(4)

देखो लाल आसमान हुआ है
कहीं पे कत्लेआम हुआ है
सड़क पे सुनसान है इस कदर
शायद हिन्दू मुसलमान हुआ है
खून के कतरे बता रहे हैं
जरूर कहीं इम्तेहान हुआ है।
खुश हैं दंगा भड़काने वाले
अमन वाला तो परेशान हुआ है
कयामत तक न मिटेगा यारों
इनसानियत पे ऐसा निशान हुआ है।
नफरत की फैली आग बुझाओ तो बात है,
दिल में किसी के प्यार जगाओ तो बात है।
हिंसा की लपटों में शहर झोंकने वालों,
सद्भावना के दीप जलाओ तो बात है।
कौमों के नाम पर लोगों को बांटते क्यूं हो,
इनसान को इनसान से मिलाओ तो बात है।
मरहम न लगाओ किसी ज़ख्मी की चोट पर,
मुल्क से फसादियों को मिटाओ तो बात है।
इधर–उधर की बात बहुत कर ली दोस्तों,
इनसानियत का पाठ पढ़ाओ तो बात है।
तेरा नहीं मेरा नहीं यह मुल्क है सबका,
यह बात ज़रा सबको बताओ तो बात है।

आदिल खान
सम्पर्क : क्षत्रिय छात्रावास, पुराना शिवली रोड, कल्याणपुर, कानपुर नगर–208017, उत्तर प्रदेश
ईमेल : mohdadil.k2009@gmail.com

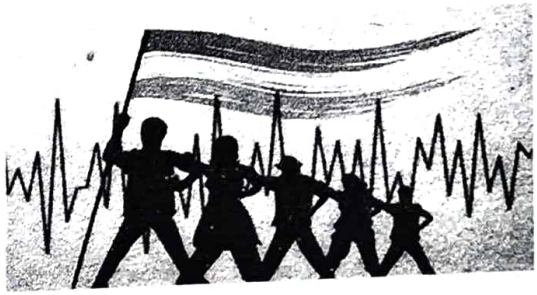

अतिराष्ट्रवाद

राष्ट्रवाद और अतिराष्ट्रवाद के बीच
महीन–सा फासला है
राष्ट्रवाद के उत्साह में
हम अतिराष्ट्रवाद पर चले जाते हैं और
अकारण ही
अपने लोगों का
विरोध करने लगते हैं
जानबूझकर नामसझी में
हम अपने ही
देश के
खिलाफ हो जाते हैं और
हमें पता ही नहीं चलता।
अपने उत्साह, अपने नारों के बीच
अपने ही अलग–थलग पड़ जाते हैं हमसे
अपने ही लोगों को हम पाकिस्तान
और आतंकवाद से जोड़कर
घटते–बढ़ते अतिराष्ट्रवाद की ओर
चलने लगते हैं हम।

देवेन्द्र कुमार मिश्रा
सम्पर्क : पाटनी कॉलोनी, भरत नगर, चन्दनगाँव, छिन्दवाड़ा–480001, मध्य प्रदेश

वर्ष-36 अप्रैल - 2016 अंक-12 रु.10/-

हिन्दी प्रचार वाणी

समस्त पाठकों को युगादी पर्व की शुभकामनाएं

इन महान् हस्तियों को पुण्यतिथि के लिए अर्पित हार्दिक श्रद्धा सुमन ।

बंकिमचन्द्र चटर्जी

महापंडित राहुल सांकृत्यायन

रामधारी सिंह "दिनकर"

डॉ. सर्वेपल्ली राधाकृष्णन

[illegible]

मोरारजी देसाई

पं.विष्णुकांत शास्त्री

विष्णु प्रभाकर

PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's
Divekar College of Commerce
KARWAR - 581 301

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, चामराजपेट, बेंगलूर-18.

RNI.No.KARHIN/2009/29806 **HINDI PRACHAR VANI** **10th of every Month**
REG.RNP/KA/BGS-2124/2015-2017 TOTAL PAGES : 32+4=36 **POSTED AT BG.PSO. Mysore Road**
Licensed to Post without pre-payment Licensed No. WPP-200 **BANGALORE - 560026**

19 फरवरी 2016 को दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद में आयोजित साहित्य मंथन समारोह में 'स्रवंति' की सह-संपादिका डॉ.गुर्रमकोंडा नीरजा की पुस्तक अनुप्रयुक्त "भाषाविज्ञान की व्यावहारिक परख"
का लोकार्पण करते हुए कार्यालय के अधिकारी गण दर्शित हैं ।

दि. 15-16 मार्च, 2016 के एक समारोह में श्री रमेश यादव, सितार वादिका अनुपमा भागवत जी तथा गायिका शुभा मुदगल जी, भोलेनाथ का रूप धारण किये कलाकार को समिति की मासिक पत्रिका "हिन्दी प्रचार वाणी" भेंट करते हुए दर्शित है ।

Smt. Sandhya Datta Kadam
Divekar College of Commerce
Kodibag Karwar
N. K. Dist

If undelivered please return to
KARNATAKA MAHILA HINDI SEVA SAMITHI
NO. 178, 4th Main Road, 6th Cross,
Chamarajpet,
Bangalore-560 018
Phone : 080-26617777

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, चामराजपेट, बेंगलोर की ओर से श्रीमती बी.एस. शांताबाई, एम.ए., द्वारा के.एम.हेच.एस.एस. प्रेस, 178, चौथा मैन रोड, चामराजपेट, बेंगलोर-18, में मुद्रित, प्रकाशित एवं संचालित। दूरभाष : 26617777 E-mail [illegible]

जाता है कि आज धन-बल और बाहुबल के जोर पर सबकुछ हासिल किया जा सकता है । स्पष्ट है कि बात राष्ट्रीय एकता की हो रही है, जबकि काम उसके उल्टे किए जा रहे हैं ।

राष्ट्रीय एकता के लिए कुछ सूत्र हैं :

1. मानव के व्यक्तित्व की एकता साधित करना, अर्थात् मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा के बीच सामञ्जस्य लाना ।
2. समाज में से विघटनकारी तत्वों को निकाल बाहर करना ।
3. राजनीति में नीति का समावेश करना ।
4. सेवा को सत्ता के ऊपर स्थान देना ।
5. सर्वधर्म समभाव की भावना को बढ़ावा देना ।
6. मानवीय मूल्यों को वरीयता प्रदान करना ।
7. सत्ता और उसके वर्चस्व को अस्वीकार करना ।
8. राष्ट्रभाषा हिन्दी को उसके पद पर आसीन करना ।
9. सार्थक लोकतंत्र की स्थापना करना ।
10. प्रशासन में सही आदमियों का चुनाव करना ।
11. सादगी का सात्विक जीवन अपनाना ।

महात्मा गांधी ने ग्राम-स्वराज की कल्पना की थी, क्योंकि वह मानते थे कि भारत गांवों में बसता है और गांवों में रहने वाला किसान सबका अन्नदाता है ।

उन्होंने यह भी कहा था कि शासन नीचे से होना चाहिए, अर्थात् वह पंचायत-राज के पक्षपाती थे । वह चाहते थे कि पंचायतें चरित्रवान लोगों को चुनकर ऊपर भेजें और शासन की बागडोर सच्चे, ईमानदार और सच्चरित्र लोगों के हाथों में हो ।

राष्ट्रीय एकता देश को निडर और साहसी बना देगी तो देश को धोखा देने की किसी की हिम्मत नहीं होगी । पर राष्ट्रीय एकता पैसा बहाने से नहीं हो सकेगी । कमेटियां और कमीशन भी देश को एक सूत्र में नहीं बांध सकते । यदि देश में निर्भयता और पुरुषार्थ होगा तो एकता के लिए प्रयत्न नहीं करना होगा, वह अपने आप स्थापित हो जायेगी । निर्भयता और पुरुषार्थ चरित्र से प्राप्त होता है ।

मंगल प्रभात फरवरी - 2016 अंक से साभार

बलिदान

वतन पर जान कुर्बान करेंगे, माता भारती की
शान बचायेंगे ।
बहादूरों आगे बढ़ते जाना,
दुश्मनों को मिटा देना
लहू बिछाये माता का मान बढ़ाते जाना
गद्दार न घुसपैठ करे, न सरहद पार करे
उने चुन-चुनकर मारे, फिर कभी न निहारे ।
अपने गुलिस्थान पर नाज करना
अमन चयन से जीते रहना
कश्मीर हमारा स्वर्ग है, आतंक कैसे फैलाएगा ?
कहा नही सुनेगा तो, गोली खाकर मरेगा ।
हर सितम छेलकर भी माँ तुझे हम बचायेंगे
सुरक्षा तेरी करते-करते, खुद की जान मिठा देंगे ।
दुश्मनों की मुंड उढ़ायेंगे, तेरे चरनों में चढ़ायेंगे ।
लाख बाधा आने पर भी हम तुझे सजायेंगे ।
नादिर कितना होशियार रहे हम उसे मिटायेंगे ।
हर पल तेरी याद में, हम अपनों से छुट जायेंगे ।
गम नहीं खुद मिटने से, हम कहेंगे अभिमान से
भारत माता अमर रहे वीरों की बलिदान से ।

श्रीमती संध्या दत्ता कदम
केनरा वेलफेर ट्रष्ट्स, दिवेकर कालेज ऑफ कामर्स
कोडीबाग, कारवार-581 532
मो. 09448796762

वर्ष-36 जनवरी - 2016 अंक-1 रु.10/-

हिन्दी प्रचार वाणी

नववर्ष और संक्रान्ति की हार्दिक शुभ कामनाएँ ।

दि-27-12-2015 इतवार को संपन्न हुए कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति के 42 वे दीक्षान्त समारोह के अवसर पर दीक्षान्त भाषण देते हुए प्रो.बालेन्दु शेखर तिवारी जी तथा स्वागत भाषण देते हुए श्रीमती बी.एस.शांताबाई जी और अध्यक्षीय भाषण देते हुए डॉ.शकुंतला नागराज जी दर्शित हैं

समिति के 42 वे दीक्षान्त समारोह से संबन्धित कार्यक्रम की कुछ झलके भावचित्र द्वारा दर्शित है।

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, ... बेंगलोर-18.

PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's
Divekar College of Commerce
KARWAR - 581 301

RNI.No.KARHIN/2009/29806 HINDI PRACHAR VANI 10th of every Month
REG.RNP/KA/BGS-2124/2015-2017 TOTAL PAGES : 32+4=36 POSTED AT BG.PSO. Mysore Road
Licensed to Post without pre-payment Licensed No. WPP-200 BANGALORE - 560026

विशिष्ट हिन्दी सेवा पुरस्कृत हिन्दी सेवियाँ दर्शित हैं ।

प्रो. एम.वी.नागराज राव

डॉ. अनुराधा एन. भट्ट

श्रीमती सोनाबाई

पूना के कवि और कथाकार डॉ.दामोदर खडसे समिति में पधारे थे ।
उस अवसर पर उनका सम्मान किया गया ।

If undelivered please return to
KARNATAKA MAHILA HINDI SEVA SAMITHI
NO. 178, 4th Main Road, 6th Cross,
Chamarajpet,
Bangalore-560 018
Phone : 080-26617777

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, चामराजपेट, बेंगलोर की ओर से श्रीमती बी.एस. शांताबाई, एम.ए., द्वारा के.एम.हेच.एस.एस. प्रेस, 178, चौथा मैन रोड, चामराजपेट, बेंगलोर-18, में मुद्रित, प्रकाशित एवं संचालित। दूरभाष : 26617777 E-mail : kmhssbg@yahoo.com

प्रचारक बन्धुगण । उन सबका आभार मानती हुई स्नातकों को, विशेष पुरस्कार प्राप्त छात्रों को तथा सम्मानित प्रचारकों को बधाई देकर उनसे प्रार्थना करती हूँ कि हिंदी के प्रचार कार्यों में दुगुने उत्साह के साथ सहयोग दें । परम पूज्य प्रो.बालेन्दुशेखर तिवारी ने अपनी उपस्थिति से समिति को मंगलमय बनाया है । आशा है कि वाग्देवी सरस्वती से अनुगृहीत प्रो.बालेन्दुशेखर तिवारी समय-समय पर यहाँ पधारकर हमें अपने सुझाव व मार्गदर्शन से प्रोत्साहित करके हिंदी प्रचार के हमारे ध्येय को यशस्वी बनायेंगे ।

हमारे आमंत्रण को स्वीकार करके हितचिंतक मित्रों ने यहाँ पधार कर समारोह को सफल बनाया है । उनको भी धन्यवाद अर्पित करना हमारा कर्तव्य है । सुमधुर प्रार्थना गीत गाकर इस सभा की पवित्रता बढ़ायी है श्रीमती रंजनी ने । सरस्वती की कृपादृष्टि उन पर सदा रहे ।

'भारत जननी एक हृदय हो एक राष्ट्रभाषा हिंदी में कोटि-कोटि जनता की जय हो" इसी प्रार्थना के साथ अपने भाषण को समाप्त करती हूँ ।

जय हिन्द, जय कर्नाटक, जय भारत

विश्व जननी

संध्या दत्ता कदम

वेद, पुरान, बाइबल, कुरआन ।
में दिया है मुझे बड़ा सम्मान ।
हर धर्म ग्रंथ में मैंने मुझे पाया ।
पूजनीय बताया, तुम्हारा स्वार्थ दिखाया ।
पर मुझ पर मुझे गर्व है ।
नारी हूँ, नरक को स्वर्ग बनाना है ।
सारे ब्रह्मांड को मुझे ही चलाना है ।
आदम को हवा ने जगाया ।
यशोदा ने कृष्ण को मक्खन खिलाया ।
कौशल्या ने राम को दूध पिलाया ।
गौतमी ने सिद्धार्थ को बुद्ध बनाया ।
मरियम ने जिजस को शांति दूत बनाया ।
सागर के पेट से मोति निकलते हैं ।
मेरे गर्भ से विश्व ज्योति निकलती है ।
बसवेश्वर, विवेकानंद मेरे ही तो लाल हैं ।
भगतसिंह, अब्दुल कलाम विश्व में विशाल हैं ।
पुरुषों की जननी तेजस्विनी मैं हूँ ।
वीरों की जननी जीजाऊ बी मैं हूँ ।
मैंने तुमपर सब कुछ लुटाया ।
तुमने मुझे देवी बनाकर मंदिर में बिठाया ।
लक्ष्मी बनाया, दिल बहलाया ।
धन, दौलत अपने हाथ लगा लिया ।
सरस्वती बनाया, संगीत गवाया ।
नर्तकी बनाकर मुझे ही नचाया ।
नाच-नाचकर दिल बहलाया ।
तुम्हारी बुरी नज़र मुझे धोखा ही देते आया ।
स्वार्थि मानव संभाल अब तो ।
मैं हूँ तो सारा जग शांत, प्रशांत है ।
दुर्गा चंडी, काली न बनाओं मुझे ।
बस विश्व जननी बनकर रहने दो मुझे ।

हिन्दी प्रवक्ता, बापूजी ग्रामीण विकास समिति,
पदवि पूर्व कला और वाणिज्य कालेज,
सदाशिवगड़, कारवार-581 352
जिल्ला-उत्तर कन्नड़
संपर्क 09448796762

वर्ष-37 दिसंबर - 2016 अंक -8 रु.10/-

हिन्दी प्रचार वाणी

अमर आत्मा को कोटि-कोटि नमन्

तुम स्वर्ग गये इस धरती से नाम तुम्हारा जीवित है । देह तुम्हारी मरी मगर आदर्श तुम्हारा जीवित है ।

अरविंद घोष

मैथिलीशरण गुप्त

सरदार वल्लभभाई पटेल

सुचेता कृपलानी

रामचन्द्र द्विवेदी'प्रदीप'

इलाचन्द्र जोशी

महावीर प्रसाद द्विवेदी

सुमित्रानंदन पंत

रामप्रसाद विस्मिल

यशपाल

जैनेन्द्रकुमार

श्री रघुवीर सहाय

डॉ.बी.आर.अम्बेडकर

विक्रम साराभाई

एम.जी.रामचन्द्रन

ज्ञानी जेल सिंह

पी.वी.नरसिंहराव

डॉ.शंकर दयाल शर्मा

रामधारी सिंह 'दिनकर'

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, चामराजपेट, बेंगलोर-18.

NI.No.KARHIN/2009/29806 **HINDI PRACHAR VANI** Date of Publication on 10th of every Month
EG.RNP/KA/BGS-2124/2015-2017 TOTAL PAGES : 32+4=36 **POSTED AT BG.PSO. Mysore Road**
icensed to Post without pre-payment Licensed No. WPP-200 **BANGALORE - 560026**

बेंगलूरु हैस्कूल में संपन्न हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, बेंगलूरु के प्रायोगिक वर्ग के अंतिम दिन श्री बसवानन्द प्रकाश जी सहायक प्राध्यापक को स्मृति स्वरूप भेंट देती हुई प्राध्यापिका डॉ.(श्रीमती)टी.एस.उषाराणी चित्र में दर्शित है । दूसरे चित्र में साथ में कॉलेज की छात्राएँ दर्शित हैं ।

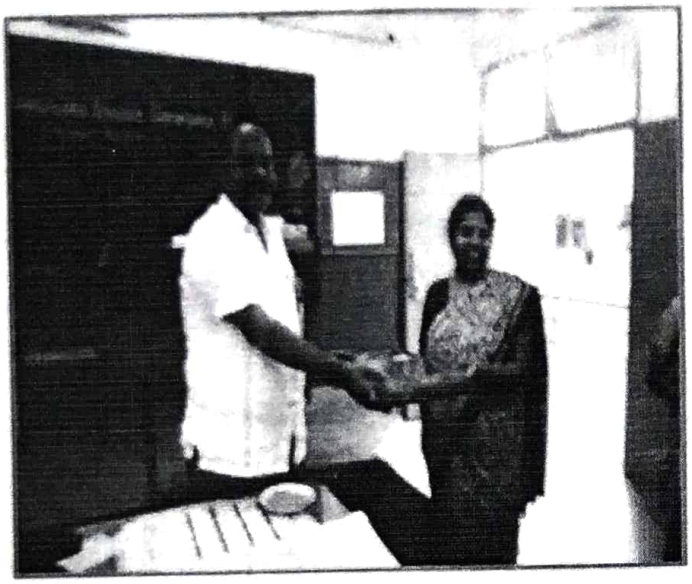

मराठी फिल्म अभिनेत्री सुरेखा पुणेकर तथा अन्य कलाकारों को रमेश यादव, इन्दौर, हिन्दी प्रचार वाणी मासिक पत्रिका भेंट करते हुए दर्शित हैं ।

5001

SMT SANDHYA DATTA KADAM
DIVEKAR COLLEGE OF COMMERCE
KODIBAG, KARWAR
NARTH KENARA-DIST

If undelivered please return to
KARNATAKA MAHILA HINDI SEVA SAMITHI
NO. 178, 4th Main Road, 6th Cross,
Chamarajpet,
Bangalore-560 018
Phone : 080-26617777

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, चामराजपेट, बेंगलोर की ओर से श्रीमती वी.एस. शांताबाई, एम.ए., द्वारा के.एम.हेव.एस.एस. प्रेस, 178, चौथा मैन रोड, चामराजपेट, बेंगलोर-18, में मुद्रित, प्रकाशित एवं संचालित। दूरभाष : 26617777 E-mail : kmhsbg@yahoo.com

इस संसार में आलसी व्यक्ति कभी सुखी एवं समृद्ध नहीं हो सकता क्योंकि जो सोएगा वह खोएगा, जो जागेगा वह पाएगा । लक्ष्मी की कृपा जागने वाले पर ही होती है । बकरी के मेमने सोए हुए भेड़िए के मुंह में अपने आप नहीं आ जाते । मेहनत करनी पड़ती है । गिरी खाने के लिए बादाम को तोड़ना ही पड़ेगा । नदी टूट जाने पर बांध का क्या फायदा, नदी सूख जाने पर नाव किस काम की और दूध बिखर जाने पर चिल्लाने से क्या लाभ । समय की कद्र करना बच्चे बचपन में सीख जाएं । समय हमारे ऊपर से उड़ जाता है और अपनी छाया पीछे छोड़ जाता है । अतः वक्त को पकड़ कर उसे कर्म रूप में ढाल लेना चाहिए । आज की सुबह नहीं जानती कि शाम को क्या होगा, अतः सुबह ही सब काम निपटा लें । सुअवसर अक्सर दूसरी बार कम ही आता है क्योंकि आने वाला कल, बीते हुए कल से कभी ज्यादा अच्छा नहीं होता ।

अमर ही रहना

-श्रीमती संध्या दत्ता कदम

मन को यूँ कभी मायूस न करना
मन बेचारा बिखर न जाय
मन को इतना कठोर न करना
मन मुर्झाकर टूट न जाय ।

मन को मध्यम रखते जाना
मन, मनों को मोहते जाय
मोहित मन को मगज में भेजना
मति, गति सीधी रह जाय ।

मन के पीछे कभी न भागना
करा-धरा, खाली न हो जाय
नाम के पीछे तुम न दौडना
यहाँ से खाली बिदा हो जाय ।

ऐसा तुम कुछ कर दिखलाना
समय ज़रा सा वसुधा को देना
मन मंदिर में माँ की सूरत
अवलोकित हो जग मगाय ।

अवधूत रिपु तू शत्रुकंटक
बन सिर छेद्रन करता जाय
लाख बाधाएं आए तुमपर
धरती पर आँच न आय ।

कदम-कदम पर रक्षक बनकर
पुत्र-पुत्रियों को फैलाया जाय
देखो फिर देश की शांती बनी रहेगी
भारत माता गर्व से सदा मुस्कुराएगी ।

केनरा गेल्फेर ट्रष्टस्
दिनेकर कालेज आँफ कामर्स
कोडीबाग, कारवार-581301
जिल्हा उत्तर कन्नड, राज्य-कर्नाटक
संपर्क-09448796762

Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during the year 2015-16

Sl. No.	Name of the teacher	Title of the book/chapters published	Title of the paper	Title of the proceedings of the conference	Name of the conference	ISBN/ISSN number of the proceeding	Name of the publisher
23	Smt. Sandhya Kadam	NO	BETI BACHANA	AASHWASTA	NO	RNI NO. MPHIN/2002/9510	PINKI SATYAPREMI, BHARATIYA SAHITYA ACADEMY UJAIN MADHYAPRADESH
24	Smt. Sandhya Kadam	NO	Vishwa Janani	Hashiye ki awaz	NO	ISSN 2277-5331	INTEGRATED SOCIAL INSTITUTES 10 INSTITUTIONAL AREA LODHI ROAD, NEW DELHI
25	Smt. Sandhya Kadam	NO	BETI BACHANA	Hashiye ki awaz	NO	ISSN 2277-5331	INTEGRATED SOCIAL INSTITUTES 10 INSTITUTIONAL AREA LODHI ROAD, NEW DELHI

KANARA WELFARE TRUST DIVEKAR COLLEGE OF COMMERCE KARWAR

PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's
Divekar College of Commerce
KARWAR - 581 301

पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/9510

आश्वस्त

वर्ष 16, अंक 142

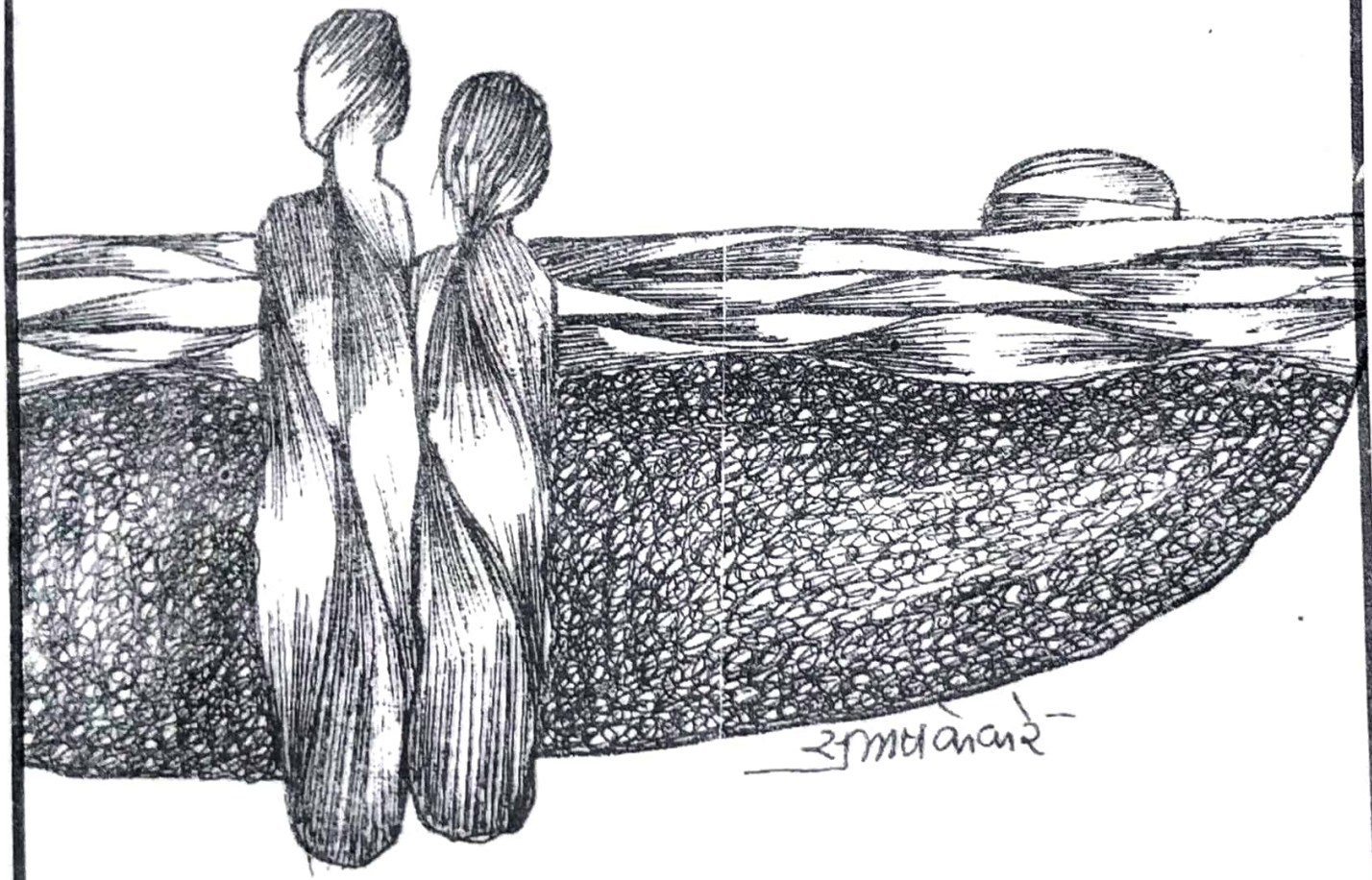

जुलाई 2015

संपादक – कलावती परमार

PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's
Divekar College of Comm...
KARWAR - 581 301

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की मासिक पत्रिका

मत लपेटो–चीथड़े
मत ढको पत्तों से गुप्तांग
मत खाओ डंगर का मांस
गला–सड़ा अनाज
मत रहो–दड़बे जैसे घरों में
मत गवाओं जीवन
अभावों में–इलाज के बिना
दूर रहो–ढोंग और पाखण्ड से

तुम्हें अपना उद्धार कदापि
स्वयं करना है
जो निहित है
शिक्षा–व्यवसाय–उच्च आचरण
और नैतिकता में

यूँ भी आर्थिक सुरक्षा के बिना
जीने योग्य नहीं
स्वतंत्रता

108, तक्करोही,
पं. दीनदयालपुरम् मार्ग,
इन्दिरा नगर, लखनऊ -227105(उ.प्र.)
मोबा. 9451144480

बेटी–बचाना

✍ संध्या दत्ता कदम

'नन्हीं–नन्हीं प्यारी–प्यारी
बेटी मेरी कितनी न्यारी
चाँद, सूरज भी फिके पड़ जाए
कितनी सयानी मेरी दुलारी
कुल दीपक बेटा सभी ने माना
बेटी का दिल कोई नहीं जाना
बेटी करेगी आंगन का श्रृंगार
बेटी से घर खुशियों का त्यौहार
बेटी से मिलेगी मधुर, सुमधुर आवाज़
पैरों में पैजनिया और पहनेगी साज
छन–छन, छन–छना छन करते चलती
आंगन क्यारी भी मन मुग्ध डोलती
माँ की ममता प्यार सागर सी उमड़ती
माँ उसे चुमने, पीछे–पीछे भागती
बेटी आगे दौड़ती माँ पीछे रहती
खेल पकड़ा–पकड़ी में कभी नहीं मिलती
जा दौड़ी–दौड़ी पिता से है लिपटती
किलकारी भरी खुशी से आंगन भर देती
फिर दोनों साथी इसे बाहों में उठाते
जीवन का सारा प्यार उसी पर लुटाते
बेटी का प्यार होता है स्वर्ग से सुन्दर
ना करना भूल कोई, भ्रूण हत्या कर कर
बेटी बिना संसार सुनसान समझना
बेटी संग जीकर मोक्ष ही पाना
बेटे से भी महान बेटी, जान जाना
बेटी बिन जीवन अधूरा समझना
बेटी को बचाना, विश्व को बचाना
यह सुन्दर नारा दुनिया को सुनाना

B.G.V.S. Arts & Com. Pre. University College
(Bapuji College) Sadashivgad
At Po. : Sadashivagad - 581352
Tal : Karwar, Dist-Uttarkannad (Kamatak)

क्या आपने ऐसा भारत देखा है ?

✍ बी.एल. परमार

क्या आपने ऐसा भी भारत देखा है ?
जहाँ मानव से मानव नफरत करता है
दलित को कुए से पानी नहीं भरने दिया जाता है
दूल्हे को घोड़ी पर नहीं चढ़ने दिया जाता है
सरपंच को कुर्सी पर नहीं बैठने दिया जाता है
राष्ट्र तिरंगा ले हाथ में नहीं फहरा सकता है
क्या आपने ऐसा भी भारत देखा है ?
जहाँ माँ–बहिनों की अस्मत लूटी जाती है
जहाँ अबलाओं की चुड़ियाँ चटकती है

ISSN 2277 - 5331

हाशिये की आवाज़

संघर्षरत् लोगों की प्रथम मासिक पत्रिका

जून 2015 | वर्ष : 10 | अंक : 6 | कवर सहित पृष्ठों की सं. 44

भूमि अधिग्रहण अधिनियम

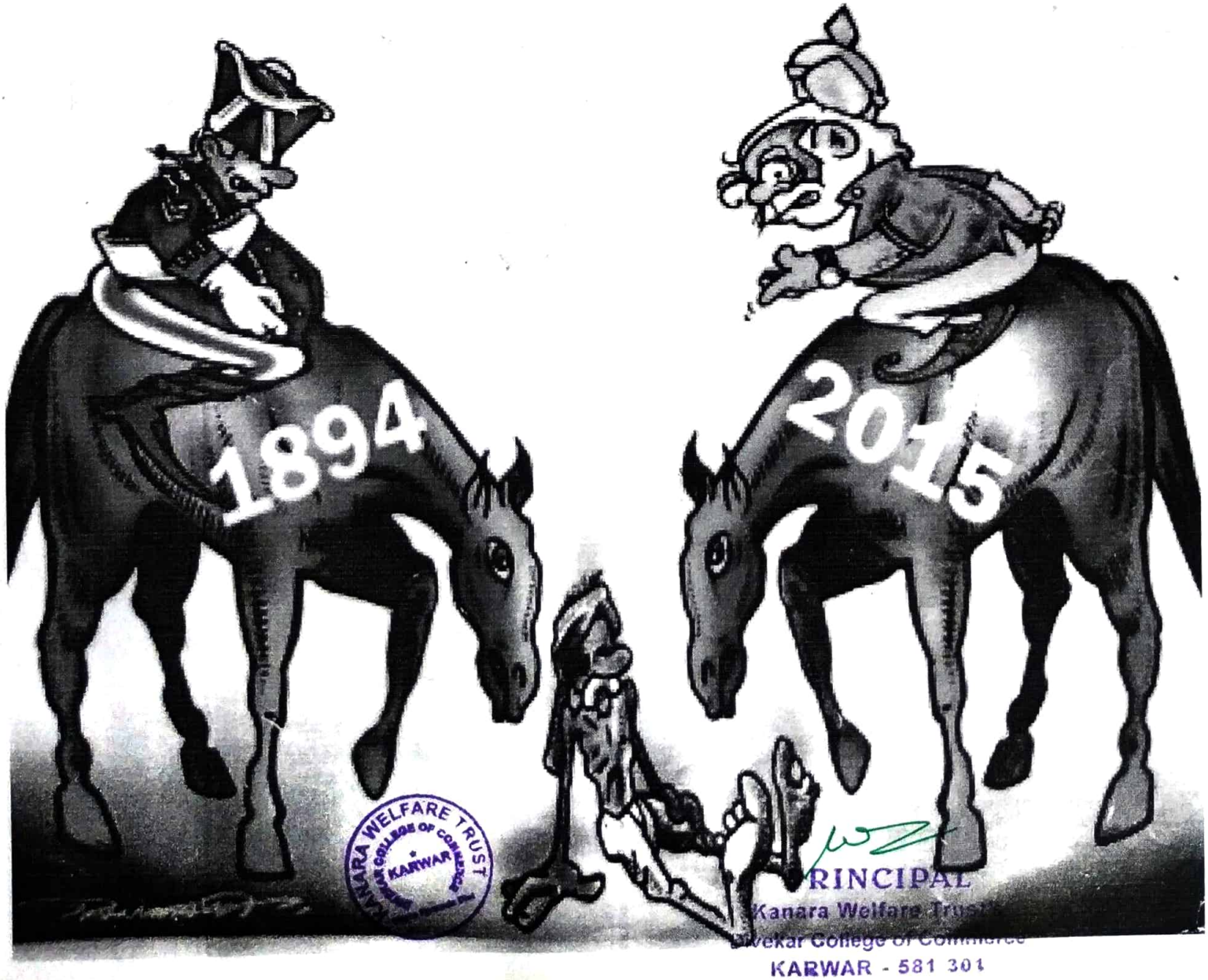

KANARA WELFARE TRUST
KARWAR COLLEGE OF COMMERCE
KARWAR
PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust
Shivekar College of Commerce
KARWAR - 581 301

है। अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर उन्होंने कहा कि अदालतों में बहुजनों और महिलाओं के प्रति संवेदना का अभाव है। उन्होंने अनुसूचित जाति-जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम के अंतर्गत कई प्रकरणों में उच्चत्तम न्यायालय द्वारा दिए गए हास्यास्पद फैसलों को गिनाया। उन्होंने कई उदाहरण देकर यह बताया कि किस प्रकार अब भी महिलाओं को न्यायपालिका में महत्वपूर्ण पदों से वंचित रखा जाता है।

फिल्म निर्माता एवं संस्कृति समीक्षक सुजाता परमिता श्रोताओं को अतीत में ले गईं—उस दौर में जब संस्कृति निर्मित हो रही थी। उन्होंने कहा कि बहुजन ही संस्कृति के निर्माता हैं, परंतु कथित सवर्णों ने धर्म का इस्तेमाल कर लोगों को अपने जाल में फंसाकर गुलाम बना लिया। उनकी संस्कृति पर कब्जा जमा लिया और उन पर शासन करने लगे। उन्होंने कहा कि सरकार को ऐसी नीतियां बनानी चाहिए, जिनसे बहुजन और दलित कलाकारों और कारीगरों को वह सम्मान एवं पहचान मिल सके, जिसके वे हकदार हैं और उन्हें मात्र श्रमिक न समझा जाए।

कुल मिलाकर कार्यकम के दौरान 'ऐसे अनेक विचार सामने आए, जो एक समाज को बदलाव के प्रति जागृत करते हैं' और जो अरूंधति रॉय के अनुसार (बहुजन) साहित्य के मूल तत्व होने चाहिए।

कार्यक्रम में मौजूद थे मीडिया समालोचक अनिल चामड़िया, उपन्यासकार संजीव, कवि मदन कश्यप, विमल कुमार, अशोक कुमार पाण्डेय एवं सुजाता तेवतिया, मानवाधिकार कार्यकर्ता विद्याभूषण रावत, साहित्यकार रजनी तिलक, प्रेमपाल शर्मा, टेकचंद, साहित्यकार और एक्टिविस्ट कौशल पवार, 'दलित मत' के संपादक अशोक दास, समाजशास्त्री अनिल कुमार आदि अनेक गणमान्य लोग।

इस अवसर पर 'द्वितीय महात्मा ज्योतिबा एवं क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले बलीजन रत्न पुरस्कार' इतिहासकार ब्रजरंजन मणि, ए. आर. अकेला (कवि, लोकगायक, लेखक एवं प्रकाशक) एवं डॉ. हीरालाल अलावा (एम्स में सीनियर रेजीडेन्ट एवं जय आदिवासी युवा शक्ति के संस्थापक) को प्रदान किये गये। कार्यक्रम का संचालन स्त्रीकाल के सम्पादक संजीव चंदन ने किया।

सम्पर्क : ए-113, प्रथम तल, पालम एक्सटेंशन (निकट आईसीआईसीआई बैंक), सेक्टर-7, द्वारका, नई दिल्ली-77

ईमेल : janvikalp@gmail.com

कवि की पंक्तियाँ

विश्व जननी

वेद, पुरान, बाइबल, कुरआन
सबने दिया है मुझे बड़ा सम्मान।
हर धर्मग्रंथ में मैंने मुझे पाया
पूजनीय बताया, तुम्हारा स्वार्थ दिखाया
पर मुझ पर मुझे गर्व है।

नारी हूँ, नरक को स्वर्ग बनाना है,
सारे ब्राह्मांड को मुझे ही चलाना है।

आदम को हैवा ने जगाया
यशोदा ने कृष्ण को मक्खन खिलाया
कौशल्या ने राम को दूध पिलाया
गौतमी ने सिद्धार्थ को बुद्ध बनाया
मरियम ने जीजस को शांतिदूत बनाया।

सागर के पेट से मोती निकलते है
मेरे गर्भ में विश्व ज्योति निकलती है
बसवेश्वर विवेकानंद मेरे ही ल‍ाल है,
भगतसिंह, अब्दुल कलाम विश्व में विशाल है।

पुरुषों की जननी तेजस्विनी मैं हूँ,
वीरों की जननी जीजाऊ बी मैं हूँ,
मैंने तुम पर सब कुछ लुटाया,
तुमने मुझे देवी बनाकर मंदिर में बिठाया,
लक्ष्मी बनाया, दिल बहलाया,
धन, दौलत सब हड़प लिया।

सरस्वती बनाया, संगीत गवाया,
नर्तकी बनाकर मुझे ही नचाया,
नचा–नचाकर दिल बहलाया,
तुम्हारी बुरी नजर मुझे धोखा ही देते आया।

स्वार्थी मानव संभाल अब अपने आपको,
मैं हूँ तो सारा जग शांत, प्रशांत है,
दूर्गा, चंडी, काली न बनाओ मुझे,
बस्स विश्व जननी बनकर रहने दो मुझे।

सख्या दत्ता कदम

सम्पर्क : हिन्दी प्रवक्ता, बापूजी ग्रामीण विकास समिति पदवि पूर्व कला और वाणिज्य कॉलेज सदाशिवगड, कारवार-581352, उत्तर कन्नड़, कर्नाटक

ISSN 2277 - 5331

हाशिये की आवाज़

...प्रथम मासिक पत्रिका

...कवर सहित पृष्ठों की सं. 44

सितम्बर 2015 वर्ष : ..

PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's
Divakar College of Commerce
KARWAR - 581 301

से-कम 4 हजार 6 सौ 40 करोड़ रुपये हैं। सरकार के पास पैसे की कोई कमी नहीं है। कर्मचारी की सीवरेज टैंक में मौत हो जाती है, जिसके लिए हम सुप्रीम कोर्ट से आदेश ले आये हैं। इसके मुताबिक कर्मचारी को 10 लाख रुपये मिलने चाहिए, लेकिन लोगों को सरकार नहीं देती है। इस सन्दर्भ में लोगों को जानकारी भी नहीं है। गरिमा के साथ जीवन जीना चाहिए। सिर्फ धन और बल के लिए जिया तो क्या जिया। आत्मसम्मान, अपनी पहचान एवं अपना व्यक्तित्व जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण हैं।

स्वच्छ भारत अभियान को सरकार ने शुरू किया है, इस पर आपकी क्या राय है?

बैजवाड़ा–भारत को स्वच्छ करना ठीक है, पर स्वच्छता के नाम पर दलितों से ही सफाई का काम कराना उद्देश्य नहीं होना चाहिए। यह लोगों की इच्छा पर निर्भर करता है। सही है अन्य तबके भी इस बात को समझ रहे हैं। हम तो हजारों वर्षों से सफाई ही कर रहे हैं, मगर उस पर कोई कुछ भी बात नहीं करता। हमें अपने हक के लिए आन्दोलन करना पड़ा। लेकिन हमें अपना अधिकार अभी तक नहीं मिला। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्वच्छ भारत अभियान का विज्ञापन विस्तृत स्तर पर हो रहा है।

2 अक्टूबर, गांधी जयंती पर सिर्फ 15 मिनट के सफाई अभियान में मंत्री लोग फोटो खिंचवाने के लिए दिखावा करते हैं। सीवर लाइन कौन साफ करता है? क्या सीवर लाइन प्रधानमंत्री साफ कर सकते हैं? अगर वे सीवर लाइन के अन्दर जायेंगे, तो मर जायेंगे, जहां करना है वहां क्यों नहीं करते? साफ-सफाई करना इनका उद्देश्य नहीं है। ये बताना चाहते हैं कि सफाई हम करते हैं, यह कोई जाति आधारित व्यवस्था नहीं बनाई गई है।

स्वच्छ भारत अभियान से मुझे लगता है कि यह कोई बड़ी स्क्रीप्ट और बड़ा नाटक है, जिसका वास्तविक उद्देश्य सिर्फ वोट प्राप्त करना है। लेकिन जो सदियों से सफाई कर रहे हैं, न ही उनके पुनर्वास के बारे में सरकार गम्भीर है और न ही उनके हक के प्रति।

सफाई कर्मचारी आन्दोलन का अगला प्लान क्या है?

बैजवाड़ा–सुप्रीम कोर्ट का जजमेन्ट 2014 आया है, जो मैला प्रथा उन्मूलन कानून 2013 के सन्दर्भ में है। इस कानून को जमीनी स्तर पर लागू करवाना और सफाईकर्मियों का पुनर्वास। जल्द से जल्द होना चाहिए। हम भारत को दो वर्षों के भीतर मैला प्रथा से मुक्त करना चाहते हैं।

□□

+शोध अध्ययन विभाग, भारतीय सामाजिक संस्थान।
सम्पर्क : 10, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली-110003
ईमेल : sayedparwez@gmail.com

कवयित्री की पंक्तियाँ

बेटी बचाना

न नहीं-नहीं, प्यारी-प्यारी
बेटी मेरी कितनी न्यारी,
चाँद-सूरज भी फिके पड़ जाए
कितनी सयानी मेरी दुलारी।
कुल दीपक बेटा सभी ने माना
बेटी का दिल कोई नहीं जाना,
बेटी करेगी आंगन का श्रृंगार
बेटी से घर खुशियों का त्योहार।
बेटी से मिलेगी मधुर, सुमधुर आवाज,
पैरों में पैजनिया और पहनेगी साज।
छन-छन, छन-छनाछन करते चलती
आंगन-क्यारी भी मनमुग्ध डोलती,
माँ की ममता, प्यार सागर-सी उमड़ती
माँ उसे चुमने, पीछ-पीछे भागती,
बेटी आगे दौड़ती माँ पीछे रहती
खेल पकड़ा-पकड़ी में कभी नहीं मिलती,
जा दौड़ी-दौड़ी पिता से है लिपटती
किलकारी भरी खुशी से आंगन भर देती।
फिर दोनों साथी इसे बाँहों में उठाते
जीवन का सारा प्यार उसी पर लुटाते,
बेटी का प्यार होता है स्वर्ग से सुन्दर
ना करना भूल कोई, भ्रूण-हत्या कर कर।
बेटी बिन संसार सुनसान समझना
बेटी संग जी कर मोक्ष ही पाना
बेटे से भी महान बेटी, जान जाना
बेटी बिन जीवन अधूरा समझना,
बेटी को बचाना, विश्व को बचाना
यह सुन्दर नारा दुनिया को सुनाना।

संध्या दत्ता कदम

सम्पर्क : बी.जी.वी.एस. आर्ट्स एण्ड कॉमर्स श्री विश्वविद्यालय कॉलेज (बापूजी कॉलेज) सदाशिवगढ़ पो. सदाशिवगढ़, तह.-कारवार, जिला उत्तर कन्नड़-581352, कर्नाटक